आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर./2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
"चतुर्वेदी चन्द्रिका" अगस्त 2024

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 48
मूल्य : 20/–

स्थापना – माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

चतुर्वेदी चन्द्रिका

वर्ष –25 | अंक–07 | सावन – भाद्रपद स.2081 | जुलाई–अगस्त 2024

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुखपत्र

द्वितीय पुण्यतिथि

स्व. श्री नील रत्न चतुर्वेदी

सुपुत्र स्व. श्री श्रीकृष्ण चतुर्वेदी (कमतरी । आगरा)

जन्म : 22 अगस्त 1939 : अवसान 04 जुलाई 2022

आप की द्वितीय पुण्यतिथि पर हम आपको हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कोटि-कोटि नमन करते हैं ।
आप की मधुर स्मृति, स्नेह, आदर्श, मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद सदैव हमारे प्रेरणास्रोत रहेंगे।

श्रद्धावनत

श्री श्रीकृष्ण बाबा परिवार । **श्री श्यामसुंदर बाबा परिवार ।** **श्री हरिचरण बाबा परिवार ।**

पत्नी : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी
पुत्र - पुत्रवधु: तरुण-निधी (नेहा), नीरज-प्रीती (मेघा)
नातिन - नाती : निष्ठा, नमन, सार्थक

निवास
107, पुष्पांजलि टावर एक्सटेंशन, दिल्ली गेट. आगरा (उ.प्र.) 282002
संपर्क: 9927100240 / 9650022838

(र.क्र. 2268)

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा, भोपाल में

घोषित कार्यकारिणी में हमारा समावेश

करने पर

श्रीमती उषा भरतचंद्रजी चतुर्वेदी

चतुर्वेदी समाज का

हृदयपूर्वक आभार !

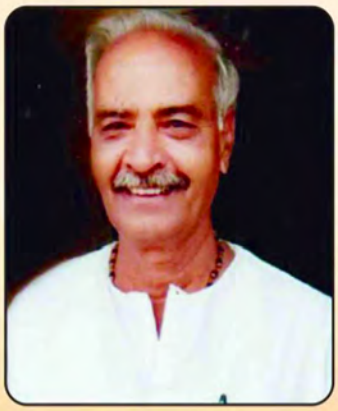

संरक्षक
देवेन्द्रनाथ चौबे

* चतुर्वेदी बांधओं के आने-जाने व ठहरने की उत्तम एवं उत्कृष्ट व्यवस्था
* उद्घाटन समारोह
* परिचर्चा
* सांस्कृतिक कार्यक्रम
* बांधओं के सुझाव
* कार्यकारिणी की घोषणा
* प्रकोष्ठों की घोषणा
* श्रीमती विनीताजी द्वारा परंपराओं, प्रथाओं व पारंपरिक होली गायन को १२ खंडों में संकलित एवं प्रकाशित कर समाज को समर्पित किया।

कार्यकारिणी सदस्य
भुवनेशकुमार चौबे

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की समस्त गतिविधियों को सुचारू रूप से संचालित करने एवं समाज बांधओं से जुड़ी व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से क्रियान्वित करने पर आयोजन समिति के श्री भरतजी, संतोषजी, श्रीमती विनीताजी, श्री शशांकजी, श्री अजयजी, श्रीमती अदितीजी, श्री सिद्धार्थजी, श्री सुमंतजी (अध्यक्ष भोपाल शाखा) एवं सभी सहयोगियों का आभार !

मे. जगदीशप्रसाद सुरेन्द्रनाथ चौबे

लाख चौरी, चपड़े के थोक व्यापारी, गोंदिया (महा.)

Mob. No. : 8208435644, 9422130798

(र.क्र. 2304)

शांति प्रमोद समर्थ एवं योग्यता छात्रवृत्ति निधि

मेरे पूज्य माता पिता **स्व. प्रमोद चतुर्वेदी एवं स्व. श्रीमती शांति चतुर्वेदी** की स्मृति में चतुर्वेदी छात्र छात्राओं हेतु आर्थिक सामर्थ योग्यता आधारित छात्रवृत्ति प्रदान करने की योजना है। पूज्य स्व. श्री प्रमोद चतुर्वेदी ने अपने जीवन काल में अनेक छात्रों को आर्थिक सहयोग दिया था।

इस योजना में योग्य जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को इंजीनियरिंग/मेडिकल शिक्षा के लिए प्रवेश लेने पर यह सहायता/छात्रवृत्ति देने की योजना है। इस हेतु दो स्नातक इंजीनियरिंग/मेडिकल छात्र छात्राओं को प्रथम वर्ष की ट्यूशन फीस का 50 प्रतिशत जिसकी अधिकतम सीमा 50,000 रूपये तक प्रति छात्र को दी जा सकेगी।

योग्यता मापदंड :- वे छात्र छात्रा जो निम्न योग्यता मापदंड को पूरा करेंगे आवेदन कर सकते हैं:

1. जिनके अभिभावक की वार्षिक आय 5,00,000/- रुपये से अधिक न हो।
2. वे छात्र छात्रा जो इंजीनियरिंग/मेडिकल स्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश ले रहे हैं।
3. जिन छात्रों ने 12वीं कक्षा में 85 प्रतिशत से अधिक अंक अर्जित किए हैं।
4. वे छात्र/छात्रा जिन्हें किसी अन्य माध्यम यथा केंद्रीय/राज्य सरकार/सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम से आर्थिक सहायता प्राप्त हो रही है। वह इस योजना के पात्र नहीं होंगे।

इच्छुक छात्र/छात्रा मेल आई. डी. - smisra1958@gmail.com पर आवेदन कर सकते हैं।

श्री संजय मिश्र

फ्लैट न. 2001 क्रीप्टोन टॉवर, न्यू प्रभादेवी रोड,
प्रभादेवी, मुंबई (महाराष्ट्र) - 400025
मोब. - 9810607145, 9987787145
मेल आई.डी.- smisra1958@gmail-com

(र.क्र. 2303)

Special Discount for Chaturvedi Only

With best Wishes

Ajay Chaturvedi   Tarun Chaturvedi

Mob.:9415402518, 9335456465

MODERN ACCESSORIES

Authorised Dealer : Sony Car Audio, Elegant Seat Covers & other Latest Car Accessories

18 Novelty Building, Lalbagh Adjacent, ICICI Bank ATM

ORANZ SALON & MAKEUP STUDIO

Amita Chaturvedi

Mob.: 8795951209

Unisex Salon, Hair, Skin, Beauty, Treatments, Bridal Services, Groom Services, Makeup, Nail Art, piercing

AASHIYANA

Facebook: Oranz salon & Makeup Studio
Instagram : Oranzsalonandmakeup
Website: http//www.oranzmakeup.com
Address: M-252, Sector-G, LDA Colony, Near Power House, Chauraha, Kanpur Road, Lukcnow
9005117722, 0522-4000221
Whatapp: 8874002999

ORANZ SPA

Tarun Chaturvedi

Mob.: 933545646

Body Spa, Body Wraps, Body Polishing, Thai Massage, Dry Massage, Oil Spa

AASHIYANA	MAHANAGAR	GOMTI NAGAR
K-97, Sector-K, Aashiana Near Power House, Chauraha Opp. Nainital Bank Lucknow, Mob.: 9919080111	Above Indian Overseas Bank B-67, Sector-C, Mahanagar, Lucknow Mob.: 7309060155, 0522-4109795	Ground Floor Hall No. 1, Pratap Bhawan, 3/118, Vinay Khand, Gomti Nagar, Lucknow Mobile: 07617089080, 0522-4047595

(र.क्र. 2308)

पुण्यस्मरण

स्व. मुन्नी देवी चतुर्वेदी

पत्नी स्व. फूलचन्द्र चतुर्वेदी

प्रथम पुण्य तिथि – 16.08.2024

(दानपुर/फरौली/साहिबाबाद)

स्व. फूलचन्द्र चतुर्वेदी

सुपुत्र स्व. गोविन्दराम चतुर्वेदी

निर्वाण : 03.07.2002

(फरौली/साहिबाबाद)

श्रद्धावनत :

पुत्र–पुत्रवधु	:	तीरथ नाथ –रजनी
		ज्ञानेन्द्र – प्रीती
पुत्री – दामाद	:	मीरा – नरेन्द्र
पौत्र – पौत्रवधू	:	निखिल – प्रिया
		सार्थक
भांजा – बहू		पुनीत – दीप्ति
प्रपौत्र	:	मेहुल, अवनी, युवान, हार्दिक
पौत्री – दामाद	:	रिचा–अभिषेक, स्वाती–वत्सल एवं श्रुति

एच–502, स्वर्ण रेजीडेंसी, साहिबाबाद, गाजियाबाद

(₹.क्र. 2300)

Bharatgas
Bharat Petroleum
COOK FOOD. SERVE LOVE.

इस ७८ वे स्वतंत्रता दिवस पर करते हैं
सलाम हम उन आजादी के दिवानों को,
जिन्होंने हमे इस खुली फिज़ा में
सांस लेने का मौका दिया। जय भारत,
जय स्वतंत्रता दिवस...!

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ!

रेक्वा गॅस
एजन्सी

दु.नं. 109, खान्देश मिल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, जलगांव. 425001 फोन: (0257) 2221095,
2221195, 2225195, 2228495. | rekhagas20032003@rediffmail.com

malhar.org

बधाई सन्देश

डॉ. पल्लवी चतुर्वेदी को इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में पीएचडी की उपाधि प्राप्त करने पर बहुत-बहुत बधाई।

डॉ. पल्लवी ने अपनी पीएचडी के दौरान पवन ऊर्जा को ग्रिड में उच्च क्षमता पूर्वक समाहित करने पर शोध किया है।

परिवार जन:
रजत चतुर्वेदी (पति) दीप्ता (पुत्री) मुंबई
अलका चतुर्वेदी-दिलीप चतुर्वेदी (सास-ससुर) लखनऊ
जलज-वर्तिका-आहना (देवर-भाभी-भतीजी) नॉएडा
शोभा चतुर्वेदी-स्व जगदीश चंद्र (माता-पिता) कोटा, शशिकला (मौसी)
डॉ. रश्मि-प्रशांत (कटनी), श्वेता-अमित (सिडनी) (दीदी-जीजाजी)
प्रभा, सुमन, सुदामा-रमा, चंद्र प्रकाश, शशि, डॉ. अश्विनी, आशीष, शिखा, सुमित, सीटू,
डॉ. मनीष-ऋचा-नलिन (भैया-भाभी-भतीजा) कोटा
खुशबू , पीयूष, तुष्टी, वेधा (भांजे–भांजी) एवं समस्त परिवारजन

डॉ. पल्लवी चतुर्वेदी राजस्थान के महामहीम राज्यपाल श्री कलराज मिश्र से पीएचडी की उपाधि प्राप्त करते हुए.

बधाई सन्देश

कुमारी खुशबू को कंप्यूटर साइंस में बीटेक ऑनर्स करने एवं बेंगलुरु में एक मल्टीनेशनल कंपनी में नौकरी लगने पर बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनायें।

परिवार जन:
डॉ. रश्मि - इंज. प्रशांत (माता-पिता), पीयूष (भाई) – कटनी
(Mobile: 9425151610, 9425154074)
विनोद जी-स्व. आशा जी, स्व. रतन कुमार जी-स्व. वसुधा जी, स्व. अशोक-स्व.अंजना (दादा-दादी) **एवं समस्त चौबे परिवार, कटनी**
सोनल-निशीत जी (भुआ-फूफा), श्रेया (गुरुग्राम)
स्व. अमित-गुंजन (चाचा-चाची) अभि, आंजनेय (मथुरा)
ननिहाल-पक्ष : शोभा चतुर्वेदी, शशिकला (नानी), अमित-श्वेता, रजत-डॉ. पल्लवी, डॉ. मनीष-ऋचा, विश्वनाथ-सुरभि, कमलेश C.A.-रागिनी, डॉ. कैलाश -डॉ. अर्चना, डॉ. ज्ञानेंद्र-डॉ. नीति, डॉ. शैलेन्द्र, समीर-राखी, क्षितिज़, स्वाति, मुदिता, वरुण-कनुप्रिया, प्रखर-डॉ. प्रियंका, डॉ. पुलकित, आदित्य, कीर्ति, साहिल, डॉ. राशि, मृणाल, तुष्टि, वेधा, नलिन, दीप्ता एवं समस्त परिवारजन

(र.क्र. 2307)

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से अपनी बात	10
संपादकीय	11
आभार प्रसून	12
महासभा कार्यकारिणी	13
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का 35 वां राष्ट्रीय अधिवेशन	18
अधिवेशन की शुभकामनाएं	20
संविधान संशोधन की रिपोर्ट	24
श्री माथुर चतुर्वेदी प्रतिभा सम्मान	25
मैं बेचारा लोटा	27
बुढापा पैरों से शुरु होता है	29
सभापति का उद्बोधन	30
सार्वजनिक विनम्र अपील	31
न्यायमूर्ति स्वर्गीय श्री प्यारेलाल चतुर्वेदी	34
पंडित प्यारे लाल जी, चंद्रपुर	35
शाखा समाचार	39
समाज समाचार	39
बिछड़े स्वजन	40

अंक 07
जुलाई - अगस्त 2024, वर्ष - 25

सभापति
श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री शशांक चतुर्वेदी
मोबा. 9826086879

कोषाध्यक्ष
श्री ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 9312242661

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. विनीता चौबे, भोपाल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
श्रीमती चित्रा चतुर्वेदी, भोपाल

संपादक
दिलीप सिकन्दरपुरिया, लखनऊ
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', BM57, नेहरू नगर
करूणाधाम आश्रम के सामने, भोपाल
मोबा. 8707894349
ई- मेल :
sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

उपसंपादक
लोकेन्द्रनाथ चतुर्वेदी, गाजियाबाद

वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in
मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
: Account No. :
1006238340
: IFSC Code :
CBIN0283533
: Branch :
Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

SHREE MATHUR CHATURVED
10292296@cbin
BHIM UPI

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका
वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : शशांक चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक : **दिलीप सिकन्दरपुरिया**
वितरण सहयोगी : विश्वास चतुर्वेदी - 81060686094

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

।। अपनों से अपनी बात।।

● उषा चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

आदरणीय बंधुवर/ भगिनी, सादर पालागन

हमेशा वहाँ पर खड़ा होने का दम रखो, जहाँ से दुनियाँ पीछे मुड़ जाती है।

आप सभी सम्मानीय को चतुर्वेदी चंद्रिका की प्रतीक्षा होगी। महासभा की आयोजन में व्यस्त हो जाने के कारण पत्रिका का संयुक्त अंक निकाला जा रहा है, जो परिवार महासभा अधिवेशन में किन्हीं कारणो से सम्मिलित नहीं हो पाए थे, उन तक महासभा की जानकारी पहुँचना आवश्यक था। निश्चित ही अंक आप लोगों को और अधिक पसंद आएगा। साथ ही आप सभी को मैं धन्यवाद भी ज्ञापित करती हूँ। महासभा में आप लोगों की उपस्थिति ने महासभा अधिवेशन की शोभा में श्री वृद्धि की। अधिवेशन में शामिल होने की सूचना आप में से बहुत से लोगों की आई थी। हो सकता है कार्य में व्यस्तता के कारण आना ना हो सका होगा। मुझे इस बात की बहुत प्रसन्नता है। आप लोगों का महासभा के प्रति लगाव देख कर ही महासभा के कार्यवाही का लाइव प्रसारण किया गया था और भारत के कोने-कोने से लोगों ने महासभा अधिवेशन की कार्यवाई देखी। यह सब आप लोगों की सहयोग की भावना कारण ही संभव हो पाया। आप लोगों को किसी प्रकार का कष्ट ना हो इसलिए महासभा आयोजन समिति ने पूर्ण प्रयास किया। उसके बावजूद भी यदि कोई कमी रह गई हो और आप लोगों को कष्ट हुआ हो तो उसे परिवार का अंग समझ कर विसस्मृत कर दीजिएगा। हमारे समाज की प्रतिभायें जिन्होंने समाज सेवा के साथ-साथ समाज के गौरव में वृद्धि की है उनको सम्मानित कर महासभा स्वयं सम्मानित हुई है। आदरणीय श्री संतोष चौबे जिन्होंने शिक्षा जगत के साथ-साथ साहित्य क्षेत्र में अपने योगदान, श्रीमती विनीता चौबे जिन्होंने चतुर्वेदी समाज की संस्कृति एवं इतिहास को संजोया। श्रीमती आभा चौबे जिन्होंने शिक्षा जगत में महाराष्ट्र में पहचान बनाई। श्री विवेक चतुर्वेदी समाज सेवा के क्षेत्र में, डॉ. अपूर्व चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), डॉ. निखिल चतुर्वेदी(आगरा), डॉ. मीनाक्ष चतुर्वेदी(भोपाल) ने समाज को अपनी निशुल्क सेवा दी हैं। श्री समर्थ चतुर्वेदी रंगमंच एवं चित्रपट (भोजपुरी फिल्म), कुमारी सुरभि मिश्रा खेल जगत में, श्री शिवजी जिन्होंने कोटा की धर्मशाला निर्माण में योगदान दिया, श्री विकास चतुर्वेदी चुन्नाभैया कानपुर चतुर्वेदी धर्मशाला को नया रूप देकर योगदान दिया। समाज में प्रतिभाओं की कमी नहीं आवश्यकता है। हमारी जानकारी का अभाव। शनै शनै जिनकी प्रतिभा संज्ञान में आएगी निश्चित ही महासभा उन्हें भी समय-समय पर सम्मानित कर स्वयं गोरन्वित होगी। सभापति होने के नाते मैने अपनी टीम की घोषणा की है। प्रयास किया है संपूर्ण भारतवर्ष से लोगों का प्रतिनिधित्व हो जहाँ चतुर्वेदी परिवार निवास करते हैं। संविधान में संशोधन भी हो गया है, जो समय की माँग थी। निश्चित ही समाज को इसका लाभ अवश्य मिलेगा। महासभा सभी लोगों के पास पहुँचे इसलिए आगामी योजना में दायित्वों का निर्धारण भी है। महासभा की आजीवन सदस्यता प्रारंभ हो गई है। अधिक से अधिक सदस्य बने यही आप लोगों से आग्रह है। चतुर्वेदी चंद्रिका के सदस्य भी आप बने। अन्नपूर्णा योजना सुचारू रूप से चलती रहेगी। यदि आप लोगों की जानकारी में कोई ऐसा परिवार हो जिसे महासभा की सहायता की आवश्यकता हो या कोई ऐसा विद्यार्थी की अर्थ के अभाव में प्रतिभा प्रदर्शन से ना रह जाए। आप सूचित कर सकते हैं। सभापति सचिव अथवा कोषाध्यक्ष किसी को भी। महासभा हमेशा तत्पर रहेगी। ऐसे ही आप लोगों का सहयोग मिलता रहेगा। ऐसी ही आशा है। हमारे पूर्व अध्यक्ष डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी द्वारा संचालित गुल्लक योजना यथावत है। आप लोग अपना योगदान उसमें भी करें। आपका 1-1 रुपया भी हमारे लिए अनमोल निधि है। आशा है गुल्लक योजना में भी आपका सहयोग निश्चित ही हमारे पास आएगा। एक कार्य और प्रारंभ कर रही हूं हमारी_शाखा सभाओं से जूम पर मुलाकात । सारी शाखा सभा एवं वहां पर निवासरत बंधुओ से व्यक्तिगत मुलाकात संभव नहीं इसलिए श्री माथुर चतुर्वेदी _शाखा सभा के पदाधिकारी एवं अन्य बंधु और_ भगिनी जो वहाँ निवास रहते हैं सभी से बात करना चाहूँगी तथा उनके बहुमूल्य सुझाव क्रियान्वित करने का प्रयास करूंगी। मेरा शाखा सभाओं से आग्रह है कि वह अपनी सुविधा अनुसार दिनांक की सूचना दें ताकि आपके साथ बातचीत सम्भव हो । तथा पदाधिकारी का परिचय भी प्राप्त हो। यदि अवकाश का दिवस रखेंगे तो ज्यादा से ज्यादा लोगों से मिलना संभव हो सकेगा। आशा है आप लोग मेरे सुझाव से सहमत होंगे।

अंत में मैं महासभा आयोजन समिति का मैं स्वयं श्री संतोष चौबे कुलाधिपति टैगोर विश्वविद्यालय, श्री सिद्धार्थ चतुर्वेदी ग्लोबल यूनिवर्सिटी के कुलपति, महासभा अधिवेशन की आयोजन समिति के संयोजक श्री शशांक चतुर्वेदी एवं श्रीमती विनीता चतुर्वेदी एवं संपूर्ण टीम को व भोपाल समाज का एवं महासभा की ओर से आभार एवं धन्यवाद व्यक्त करती हूँ। रक्षा बंधन और स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं...

सादर धन्यवाद सहित

संपादकीय

चंद्रिका परिवार में सभी का हार्दिक अभिनन्दन, सप्रेम पालागन।

जब शंशाक जी ने मुझे चंद्रिका का सम्पादक नियुक्त होने की सूचना दी तो अजीब सी ऊहापोह में उलझ गया, सोचने लगा कि जिस पद को राधाकृष्ण जी, कालिका प्रसाद जी एवं ऋषिकेश जी जैसे महानुभावों ने सुशोभित किया था तथा विनिता जी, डॉ कुश जी एवं शशांक जी ने अपने परिश्रम एवं लगन से चंद्रिका की प्रगति को गतिमान बनाए रखा, मुझे असमंजस ने घेर लिया कि क्या मैं इस महत्वपूर्ण जिम्मेदारी को निभा पाऊंगा ।तब संरक्षक भरत जी, डॉ प्रदीप जी एवं अध्यक्ष उषा जी ने मेरे मनोबल को प्रोत्साहित किया , विशेषकर डॉ कुश जी एवं शंशाक जी ने हरसंभव सहयोग एवं समर्थन का विश्वास दिलाया। मेरा विश्वास है कि समाज के सभी सदस्यों के सुझाव, सहयोग एवं लेखन से इस जिम्मेदारी को पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण से निभालूंगा।

गीता में भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा ---

तस्मात सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च। मय्यर्पितमनोबुध्दिर् मामेवैष्यस्यसंशय।। (भगवदगीता 8-7)

अर्थात हे अर्जुन तुम मेरा सदैव कृष्ण के रूप में चिंतन कर अपना युद्ध कर्म करते रहो, मन बुद्धि को स्थिर कर मुझको अर्पित करो सफलता अवश्य मिलेगी। मैं भी भगवान कृष्ण को समर्पित होकर अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसर होता हूं।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष उषा जी द्वारा भोपाल अधिवेशन में कार्यभार ग्रहण करने के बाद यह चतुर्वेदी चंद्रिका का पहला अंक है, अतएव हम सब उनके कार्यकाल को सफल एवं सार्थक बनाने के लिए पूर्ण निष्ठा व लगन से परिश्रम करने का प्रण लेते हैं।पहला लक्ष्य महासभा की सदस्य संख्या को दुगुना करने का है,अभी से ही प्रयास करने पर सफलता मिलेगी। इसके साथ ही अन्नपूर्णा योजना, छात्रवृत्ति, स्वास्थ्य सेवा के लिए अर्थ संग्रह भी करना है, जिससे महासभा समाज के हर जरुरतमंद सदस्य की यथासंभव सहायता कर सके।

कहते है ----

.... धनाद् धर्मः,तत सुखम

चंद्रिका की सदस्यता में भी प्रगति होगी, ऐसा विश्वास है। वर्तमान में चंद्रिका की सदस्य संख्या 3156 हैं, अतएव डाक विभाग से प्रेषित करने के लिए संख्या 3200 का पंजीकरण है। पत्रिका एवं पाठक का संबंध चोली-दामन जैसे होते हैं, एक के वगैर दूसरे का अस्तित्व पर ही प्रश्न चिन्ह लग जाता है। चंद्रिका के विषय में डाक द्वारा प्राप्त नहीं होती आम शिकायत है,हम आपकी शिकायत दूर करने का यथासंभव प्रयास करेंगे, लेकिन आपके सहयोग के बिना कुछ भी संभव नही है, आपको भी कभी -कभी अपने पोस्ट आफिस पर देखना होगा। हमारे शहरो का असीमित विस्तार हो रहा है, लेकिन डाक सेवाएं सिकुड़ती सी प्रतीत होती है। पंजीकृत डाक से पत्रिका मंगाने में शिकायत का प्रतिशत कम है, शहर में कुछ अतिरिक्त पत्रिकाएं भेजने पर लेने या पहुंचाने की समस्या रहती है,पीडीएफ से पाठकों को संतुष्टी नहीं मिलती।हम किसी अन्य व्यवस्था पर भी विचार कर सकते हैं, जिसके लिए आपसे सुझाव एवं सहयोग की अपेक्षा है,आप अपना सुझाव या प्रस्ताव लिखित में अवश्य भेजें,हमारा विश्वास है कि मिलजुल कर प्रयास करने पर सफलता अवश्य मिलेगी। आधुनिक युग में हर समस्या पर शोध एवं अध्ययन हो रहे हैं,इस पर हम शोध करने का प्रयास कर सकते हैं। अभी एक शोध में निष्कर्ष निकाला है कि फोन पर सायं कालीन सम्पर्क एवं संवाद अधिक फलदाई होता है!

पत्रकारिता की शुरुआत में ही गुरु जी से सीखा था..... शब्दाहे शस्त्राः आहे,जपुन बापरा

अर्थात हमारे शब्द बोलने या लिखने में शस्त्र की भांति ही कार्य करते हैं,अतएव शब्दों को भी शस्त्रों की भांति सोच विचार कर ही प्रयोग करना चाहिए। हमारा प्रयास होगा कि हमारे व्यक्तव्य या लेख से कोई भी आहत न हो।

चंद्रिका के लिए परम्परा, रीति- रिवाज, स्वास्थ्य संबंधी, रसोई, पकवान, समाज के किसी सदस्य की उपलब्धि एवं अन्य विषय पर आपके आलेख ही चंद्रिका को समाज का चन्द्रमा बनाने में सफल होंगे।

आपके आलेख, सुझाव एवं सहयोग का आकांक्षी..... स्वतंत्रता दिवस और रक्षा बंधन की शुभकामनाएं...

– दिलीप सिकंदरपुरिया

आभार प्रसून

चतुर्वेदी चंद्रिका के नवनियुक्त सम्पादक भ्राता दिलीप सिकंदरपुरिया का जन्म सिंकदरपुर के प्रसिद्ध अप्पा परिवार में 9 अक्टूबर 1958 को गांव में ही हुआ था। आपके पिताजी स्वतंत्रता सेनानी पं ज्वाला प्रसाद जी एवं माताजी सावित्री देवी (होलीपुरा) थी। ज्वाला प्रसाद जी ने सन 1942 में रेलवे की नौकरी त्याग कर "भारत छोड़ो आंदोलन" में सक्रिय भूमिका निभाई। उसके बाद आप आर. एस. एस. में सक्रिय हो गए। सन 1948 में आर एस एस पर प्रतिबंध लगने पर आप नैनी जेल में बंद रहे थे। सन 1950 में आप राष्ट्रधर्म प्रकाशन लखनऊ से जुड़कर काम करने लगे। वहां आप दीनदयाल जी, अटल जी, नानाजी के साथ ही निवास करते थे। जहां आप सन 1981 तक प्रबंध व्यवस्थापक रहे। आप लगभग 12 वर्ष तक पांचजन्य साप्ताहिक के प्रकाशक के साथ ही कार्यवाहक सम्पादक भी रहे। सन 1962 में आप परिवार को भी लखनऊ ले आए, अतएव दिलीप जी की शिक्षा दीक्षा लखनऊ में ही हुई। आपने सन 1983 में लखनऊ विश्वविद्यालय से एल एल बी की डिग्री हासिल की, इसी दौरान आपने पत्रकारिता महाविद्यालय,नई दिल्ली से एक वर्षीय पत्रकारिता प्रशिक्षण प्राप्त किया।अपने प्रेरणास्त्रोत ज्येष्ठ भ्राता श्री कमल जी की इच्छानुसार दिलीप जी के कैरियर की शुरुआत अमर उजाला लखनऊ में पं अच्युतानंद मिश्र के संरक्षण में हुई।

उसके बाद आप लखनऊ से ही प्रकाशित दैनिक तरुण भारत एवं दैनिक प्रतिदिन में कार्यरत रहे। आपके पत्र 'धर्मयुग' एवं 'हिन्दुस्तान' साप्ताहिक में भी प्रकाशित हुए। लेकिन प्रारब्ध में फार्मा कंपनी की नौकरी लिखी थी,अब आप अपना मेडिसिन का व्यवसाय करते हैं। लेखन कार्य भी सदैव चलता रहा,आप 'क्राइम वांच' मासिक पत्रिका से भी जुड़े रहे। लखनऊ चतुर्वेदी मंडल से प्रकाशित चतुर्वेदी संदेश के लगभग 16 वर्ष से सम्पादक हैं। ₹चतुर्वेदी चंद्रिका₹ के आप सलाहकार रहे, साथ ही चंद्रिका में आपके लेख प्रकाशित होते रहते हैं। लगभग 15 साल से दिलीप जी महासभा कार्यकारिणी के सदस्य हैं।

दिनाँक 15-16 जून 2024 को भोपाल में आयोजित श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के राष्ट्रीय अधिवेशन में नवनिर्वाचित सभापति श्रीमती उषा चतुर्वेदी द्वारा नई समिति का गठन किया गया जिसमें मुझ पर विश्वास करते हुए, उनके द्वारा मुझे नई जिम्मेदारी सौंपी गई। पूर्व में मेरे महासभा के सफर में आ0 भरत जी के कार्यकाल 2005 में युवा प्रकोष्ठ से प्रारंभ हुआ। चतुर्वेदी चंद्रिका में वितरण सहयोगी के रुप में सेवा दी। फिर महासभा कार्यकारिणी सदस्य, 11 वर्षों तक सह-सचिव, पत्रिका प्रबन्धक एवं संपादक जैसे अनेक पायदानों से होता हुआ ये सफर यहाँ तक पहुंच गया।

आदरणीय भरत जी के कार्यकाल में गठित युवा प्रकोष्ठ का मैं एक हिस्सा था। महासभा के मंच पर मुझे मौका देने के लिए आ0 भरत जी का बहुत-बहुत आभार। आदरणीय विनीता जी के संरक्षण में मुझे पत्रिका की कई बारीकियां सीखने को मिली। इस सफर में बड़े भाई तुल्य सहयोग व मार्गदर्शन हेतु आ0 प्रदीप चतुर्वेदी का बहुत-बहुत आभार इस सफर में मुझे मुनींद्रनाथ जी, आ0 कुश भैया व भाई भरत जी का भी अभूतपूर्व सहयोग प्राप्त हुआ। इस सफर में मेरे साथ भाई नीरज जी (मैनपुरी), विशाल जी, (पुरा), दिलीप सिकंदरपुरिया (लखनऊ), लोकेंद्र (गाजियाबाद) अभय राज जी (गुरुग्राम) आशुतोष जी (कानपुर), पदम जी (लखनऊ), धीरेंद्र जी (कानपुर), भाई कौशल जी दिल्ली), प्रदीप जी (गाजियाबाद), राकेश जी (मथुरा) व अन्य सभी ने यथासंभव सहयोग दिया। मेरे संपादन काल में सहयोग हेतु आ0 ऊषा जी (भोपाल), आ0 चित्रा जी (भोपाल), आ0 बीना जी (जयपुर), आ0 कैलाश जी (कासगंज), ऋषभ जी (देहरादून), भाई भरत जी (रिषरा), भाई दिलीप जी का बहुत बहुत आभार। समय समय पर सहयोग के लिए पंकज जी (मुंबई), विवेक जी (मुंबई), विपिन जी (लखनऊ), संजय जी (कानपुर), अंशुमान जी (जयपुर) का भी आभार।

इस सफर में मैंने अपने पिता आ0 जगदीश जी को भी खोया। वे लेखन के क्षेत्र में सदा मुझे प्रोत्साहित करते थे व मेरा मार्गदर्शन करते थे। आदरणीय प्रभात जी (इटावा) व भाई धीरेंद्र जी (मैनपुरी) सदा याद रहेंगे।

संपादक के सहयोग व प्रकाशन में सहयोग व समन्वयन हेतु एक वितरण समिति का गठन किया जा रहा है। जिसके श्री विश्वास जी (भोपाल) संयोजक होंगे।

इनका सहयोग करेंगे।

- शशांक चतुर्वेदी

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की कार्यकारिणी समिति

2024 – 2027

संरक्षक :– सर्वश्री सतीश चतुर्वेदी, श्री भरत चतुर्वेदी (पूर्व सभापति), श्री आर.आर. चतुर्वेदी, श्री कमलेश पाण्डे (पूर्व सभापति), डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी (पूर्व सभापति), ले जनरल विष्णुकांत, श्री विकास चतुर्वेदी (कानपुर), श्री संतोष चौबे (भोपाल), श्री देवेन्द्र चौबे (गोंदिया), श्री महेश चतुर्वेदी (दिल्ली)।

परामर्श मण्डल :–

(1) सर्वश्री अविनाश जी (कानपुर) (2) श्री कैलाश जी (कासगंज)
(3) श्री ऋषभ जी (देहराइन) (4) श्री उपेन्द्र पाण्डे (कोलकता)
(5) श्री भरत जी (रिषड़ा) (6) श्री शिवजी (कोटा)
(7) श्रीमती बीना मिश्रा (मैनपुरी/आगरा)

सभापति :– श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी

उप–सभापति :– सर्वश्री श्री मुनीन्द्र नाथ जी (नोयडा), श्री पंकज चतुर्वेदी (मुम्बई), श्रीमती आभा चतुर्वेदी (नागपुर),. डॉ कुश चतुर्वेदी (इटावा), श्री विनोद चतुर्वेदी (गुरूग्राम), श्री सुमंत चतुर्वेदी (आगरा), श्री अंशुमन चतुर्वेदी (जयपुर)

सचिव :– श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल)

सह–सचिव :– श्री आशुतोष चतुर्वेदी (कानपुर), श्री गोविन्द चतुर्वेदी (जयपुर), श्री करूणेश चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री अभयराज चतुर्वेदी (गुरूग्राम), श्रीमती बबीता चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री मनीष चतुर्वेदी (कोटा)

कोषाध्यक्ष :– श्री ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी (साहिबाबाद)

सम्पादक :– श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ) उपसम्पादक :– श्री लोकेन्द्र (गाजियाबाद)

(1) श्री मनीष चतुर्वेदी (हरदोई) (2) श्री लोकेन्द्र (गाजियाबाद)
(3) डॉ. राकेश चतुर्वेदी (मथुरा) (4) श्री भुवनेश कुमार चौबे (गोदिया)
(5) श्री अजय चौबे (भोपाल) (6) श्री राकेश कुमार चतुर्वेदी, चुनचुन (बरेली)
(7) श्री विशाल चतुर्वेदी (आगरा) (8) श्री राहुल चतुर्वेदी (मैनपुरी)
(9) श्री प्रदीप चतुर्वेदी(संजू) गाजियाबाद (10) श्री राजीव चतुर्वेदी (अहमदावाद)

(11) श्री विवेक (मुम्बई)
(12) श्री विपिन (लखनऊ)
(13) श्री मनीष चतुर्वेदी (दिल्ली)
(14) श्री ललित चतुर्वेदी (लखनऊ)
(15) श्रीमती विनीता (देहरादून)
(16) श्री कृष्ण बल्लभ (बिलासपुर)
(17) श्री संजय मिश्रा (कानपुर)
(18) श्री सुदीप (फिरोजाबाद)
(19) श्री अभिषेक (ग्वालियर)
(20) श्री आशीष रानू (आगरा)
(21) श्री प्रवेश (कानपुर)
(22) श्री आशीष सुभाष (आगरा)
(23) श्री हर्षमोहन (आगरा)
(24) श्री आलोक चतुर्वेदी (कोटा)
(25) श्री सतेन्द्र चतुर्वेदी (नोयडा)
(26) श्रीमती चित्रा चतुर्वेदी (भोपाल)
(27) श्री नवीन (जहांगीरपुर/लखनऊ)
(28) श्री सौरभ (लखनऊ)
(29) श्रीमती अंजु (मुम्बई)
(30) श्रीमती अर्चना (जयपुर)
(31) श्रीमती इंदु (नोयडा)
32) श्री नवीन (चैन्नई)
(33) श्री हितेष (पुरा)
(34) श्री तनुज चौबे (नागपुर)
(35) श्री अरूण चतुर्वेदी (जयपुर)
(36) श्री हर्ष कमल (बनारस)
(37) श्रीमती अलका (करनाल)
(38) श्री विमल (नोयडा)
(39) श्री मनोज (सागर)
(40) श्रीमती क्षमा (ग्वालियर)
(41) श्री प्रवेश चांपा (छत्तीसगढ़)
(42) श्री कृष्णकांत (हैदराबाद)
(43) श्रीमती मीता चतुर्वेदी (कानपुर)
(44) श्री अनुराग बब्बल (आगरा)
(45) श्री मधुपम चतुर्वेदी (बम्बई)
(46) श्री धनेश चतुर्वेदी (जहांगीरपुर/साहिबाबाद)
(47) श्री कैलाश चतुर्वेदी (देवास)
(48) डॉ. मीनाक्ष चतुर्वेदी (भोपाल)
(49) श्री मुकेश गिरिश पाण्डे (कोलकाता)

स्थाई आमंत्रित :–

(1) सर्वश्री मनोज जी (बैंगलोर)
(2) श्री पद्म जी (लखनऊ)
(3) श्री अशोक जी (फरीदाबाद)
(4) श्री गिरधारी चतुर्वेदी (जयपुर)
(5) श्री कमलेश रावत जी (कोटा)
(6) श्री विपिन पाण्डे जी (गाजियाबाद)
(7) श्री राजेन्द्रनाथ जी (इलाहबाद)
(8) डॉ. अपूर्व जी (फिरोजाबाद)
(9) डॉ. कपिल जी (आगरा)
(10) श्री अनिल चतुर्वेदी जी (भोपाल)
(11) श्री अरविंद चतुर्वेदी (दिल्ली)

विशेष आमंत्रित :–

(1) श्री मधुकर पाठक (आगरा)
(2) श्री नीरज चतुर्वेदी (चक्रधरपुर)
(3) श्री कौशल (दिल्ली)
(4) श्री अम्बर पाण्डे (भोपाल)
(5) श्री साकेत (मैनपुरी)
(6) श्री दीपक (लखनऊ)
(7) श्रीमती तृप्ति (पटना)
(8) श्री अंकुर (कटनी)
(9) श्री शैलेन्द्र (उचाड़)
(10) श्री अनुराग टिंचू (कानपुर)
(11) श्रीमती शिखा पाठक (थाणे)
(12) श्रीमती अमिता (लखनऊ)
(13) श्री उमेश बुलंदशहर
(14) श्री ललित (जयपुर/नोयडा)
(15) श्री श्यामलाल (भिण्ड)
(16) श्री आलोक (जयपुर)
(17) श्री संजय (लखनऊ)
(18) श्रीमती मधु देहरादून
(19) श्री धमेन्द्र कानपुर
(20) श्री मनीष चतुर्वेदी (इटावा)
(21) श्री पीयूष (पूना)
(22) श्री जीतू (पूना)
(23) श्री मधुर (बैंगलोर)
(24) श्री यदुवेश (पुरा/लखनऊ)
(25) श्री नवीन (बैंग्लोर)
(26) श्री दिलीप (हरिद्वार)
(27) श्री शैलेन्द्र (फिरोजाबाद)
(28) श्री प्रवीण (हैदराबाद)
(29) श्री नीलकमल (कलकता)
(30) श्री मुकेश कलकता (तरसोखर)
(31) श्री शैलेन्द्र (फरीदाबाद)
(32) श्री नरेश (भोपाल)
(33) श्री विश्वास चतुर्वेदी (भोपाल)
(34) श्रीमती वंदना चतुर्वेदी (रिषड़ा)
(35) श्री प्रशांत चतुर्वेदी (मथुरा)
(36) श्री नरेन्द्र कुमार चौबे (ग्वालियर)
(37) श्री भूषण (साहिबाबाद)
(38) श्री दुर्गेश चतुर्वेदी (जयपुर)
(39) श्री योगेन्द्रनाथ जी (ग्वालियर)
(40) श्री अनुराग चतुर्वेदी (गुरूग्राम)

मूल निवास प्रकोष्ठ :–

(1) श्री गगन (पुरा) संयोजक
(2) श्री जय चतुर्वेदी नानू फरौली
(3) श्री नरेश चतुर्वेदी (तालगांव)
(4) श्री विशाल (दानपुर)
(5) श्री सौरभ "आशू" (पुरा)
(6) श्री समर्थ (होलीपुरा)
(7) श्री शेलेन्द्र (फरौली)
(8) श्री मधुर (पुरा)
(9) श्री धर्मेन्द्र चतुर्वेदी (पिनाहट)
(10) श्री गोविन्द्र चतुर्वेदी (जहांगीरपुर)

शाखा सभा प्रकोष्ठ :–

(1) ले. जनरल विष्णुकांत चतुर्वेदी (नोयडा)
(2) श्री विवेक चतुर्वेदी (मुम्बई)
(3) श्री अजय चतुर्वेदी (लखनऊ)
(4) श्री अजय तिवारी (ग्वालियर)
(5) श्री सुनील चतुर्वेदी (जयपुर)
(6) श्री विनय चतुर्वेदी (कोटा)
(7) श्रीमती नितीका चतुर्वेदी (गुरूग्राम)
(8) श्री सुमंत चतुर्वेदी (भोपाल)
(9) श्री प्रदीप चतुर्वेदी (गाजियाबाद)
(10) श्री सुशील चतुर्वेदी (फरीदाबाद)
(11) श्री हरेश चतुर्वेदी (आगरा)
(12) श्री मुकेश चतुर्वेदी (आगरा)
(13) श्री संजय चतुर्वेदी (अहमदाबाद)
(14) श्री पंकज चतुर्वेदी (हरदोई)

युवा प्रकोष्ठ :–

(1) श्री मधुपम– मुम्बई (संयोजक)
(2) श्री खगेश (कोलकता) सह–संयोजक
(3) श्री नवीन (मथुरा)
(4) श्री प्रमेन्द्र (ग्वालियर)
(5) श्री आशीष (कोलकाता)
(6) श्री नमन (फिरोजाबाद)
(7) श्री सुनील (जयपुर)
(8) श्री हेमंत (कोलकाता)
(9) श्री नमन (लखनऊ)
(10) श्री दिवस (लखनऊ)
(11) श्री शशांक (जमुआरामगढ़)

प्रवासी भारतीय प्रकोष्ठ :–

(1) श्री विवेक चतुर्वेदी–संयोजक (मम्बई)

शाखा सभा प्रकोष्ठ :–

चिकित्सा प्रकोष्ठ :–

(3) डॉ. मीनाक्ष–संयोजक (भोपाल)

महिला प्रकोष्ठ :–

सांस्कृतिक प्रकोष्ठ :–

उद्यमिता प्रकोष्ठ :–

(1) प्रसून चतुर्वेदी (भुवनेश्वर)

महिला प्रकोष्ठ एवं अन्य प्रकोष्ठ शीघ्र गठीत किये जायेंगे।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

सदस्यता आवेदन प्रपत्र

सेवा में,

मंत्री,
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा।

महोदय,

मैं श्री/श्रीमती/सुश्री.....सुपुत्र/पत्नी ..... मूल निवासी ..... वर्तमान पता ..... गोत्र .....अल्ल..... जन्मतिथि .....फोन नं. .....मोबा.नं. .... ई–मेल आई.डी ..... श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की कुल क्रमागत/आजीवन/सत्र सदस्यता/चतुर्वेदी चंद्रिका की वार्षिक/पांच वर्ष/महासभा एवं पत्रिका की संयुक्त सदस्यता ग्रहण करना चाहता हूँ एवं इस निमित्त **"श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा"** के पक्ष में देय रूपये ..... शब्दों में..... डिजिटल डायरेक्ट ट्रांसफर/नगद/चेक एटपार/बैंक ड्राफ्ट द्वारा प्रदान कर रहा हूँ। प्रमाणित छायाप्रति संलग्न है।

मैं सत्यापित करता हूँ कि –

1. मैं 18 वर्ष से अधिक आयु का माथुर चतुर्वेदी हूँ।
2. मैं घोषणा करता हूं कि मैने महासभा की कुल क्रमांगत/आजीवन/सत्र (किसी एक) सदस्यता के लिए आवेदन कर रहा हूँ।
3. दिनांक 16.06.2024 को महासभा के अधिवेशन में पारित महासभा के संशोधित संविधान 2024 के प्रति मेरी पूर्ण आस्था एवं निष्ठा है तथा तत्–निहित नियमों, उपनियमों, धाराओं, उपधाराओं आदि के पालन के लिये वचनबद्ध हूँ।
4. यदि संज्ञान में आता है कि महासभा से संबद्ध/आस्था रखने वाली माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा/सभा के अतरिक्त मैं किसी अन्य माथुर चतुर्वेदी संस्था का सदस्य हूं तो मेरी श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की सदस्यता स्वतः ही निरस्त मानी जाए इसमें मेरी पूर्ण स्वीकारोक्ति होगी।

दिनांकः भवदीय

संलग्नकः स्व–सत्यापित (ओरिजनल ब्लू इंक)
आधार कार्ड की छायाप्रति

हस्ताक्षर –
नाम–

1. **महासभा का आजीवन सदस्य पत्रिका का 05 वर्षीय सदस्य बन सकता है तथा महासभा का सत्र सदस्य पत्रिका की वार्षिक सदस्यता ग्रहण कर सकेगा।**
2. **मैं ..... उपरोक्त सदस्यता आवेदन पत्र में दिये गये सभी विवरण को महासभा के सदस्यता हेतु सत्यापित करता हूँ।**

हस्ताक्षर –
नाम –
कार्यकारिणी सदस्य
मोबाईल नंबर

महासभा सदस्यता शुल्क	**पत्रिका सदस्यता शुल्क**	**महासभा आजीवन एवं 5 वर्षीय पत्रिका संयुक्त**
कुल क्रमागत रूपये 5001/–	वार्षिक रूपये– 251/– (नवीनीकरण शुल्क)	सदस्यता
आजीवन सदस्यता रूपये 501/–	महासभा सत्र सदस्यता एवं पत्रिका वार्षिक सदस्यता रूपये– 352/–	रूपये – 1501/–
सत्र सदस्यता रूपये 101/–	पत्रिका (पांच वर्ष) रूपये– 1000/– (केवल महासभा सदस्यों हेतु)	

पता – मंत्री, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा, 405/406 चिरंजीव टावर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली– 110019

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का
35 वां राष्ट्रीय अधिवेशन

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के 35 वे राष्ट्रीय अधिवेशन के 15-16 जून को भोपाल में आयोजन की चर्चा मात्र से मन हिलोरें लेने लगा कि कैसा मौसम होगा ? कैसा माहौल होगा ? 2005 के भोपाल अधिवेशन की यादें भी ताजी होने लगी।13 जून की शाम को लखनऊ से हम लोग महाकाल एक्सप्रेस से उज्जैन के लिए चल दिए,14 जून को हम लोगों ने महाकाल दर्शन के साथ ही नवनिर्मित कोरीडोर एवं अन्य मंदिरों के दर्शन करने के बाद देर शाम भोपाल पहुंच गए, रात्रि में भोपाल अत्यंत सुंदर लग रहा था, जहां वृंदावन गार्डन में आवासीय व्यवस्था की गई थी, वहां पहुंचने पर पीयूष जी ने मुस्कुराते हुए हम लोगों का स्वागत किया तथा हम लौगो को निर्धारित कमरों की चाबी सौंपी, थोड़ी देर बाद ही हम लोग फ्रेश होकर भोजन कक्ष में पहुंच गए, जहां भरत जी, उषा जी, शशांक जी के साथ अन्य बांधवों से मिलने के साथ ही सुस्वादु भोजन ग्रहण किया।

दूसरे दिन 15 जून की आगुंतकों की संख्या बढ़ गई थी, सबसे पालागन के आदान प्रदान के साथ स्वादिष्ट नाश्ता करने के बाद व्यवस्था के अनुसार बस से लगभग 24 किमी दूर स्थित रविन्द्र नाथ टैगोर यूनिवर्सिटी के लिए रवाना हुए,आर एन टी यू का भव्य प्रांगण देखकर आंखें फैलती चली गई। वहां व्यक्तिगत पंजीकरण कराने के साथ ही आई कार्ड एवं बैग में साहित्यक पुस्तकें भेंट में मिली, इसके बाद हम सब शारदा आडीटोरियम में पहुंच गए, जहां की सजावट देखकर मन गदगद हो गया।मंच से श्री विनय उपाध्याय आगुंतकों का स्वागत करते हुए सभी से स्थान ग्रहण करने का आग्रह कर रहे थे। इसके बाद मंच पर गणमान्य अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर देवी चित्रों पर माल्यार्पण किया। उसके बाद सुसज्जित बच्चों ने भजन -- राम नाम रस --- गाकर वातावरण को अध्यात्मिक बना दिया, इसके बाद प्रमुख अतिथियों नवनिर्वाचित अध्यक्ष ऊषा जी, संरक्षक भरत जी, लेफ्ट. जनरल विष्णुकांत जी, डॉ. प्रदीप जी, स्वागताध्यक्ष संतोष जी, विनीता जी, मुनीन्द्र जी, शशांक जी को मंच पर आमंत्रित कर डॉ. सिद्धार्थ ने पुष्प भेंट कर स्वागत किया। संतोष जी के उद्बोधन के बाद डॉ विनीता चौबे द्वारा लिखित श्री माथुर चतुर्वेदी समाज का

सांस्कृतिक इतिहास के साथ ही अधिवेशन स्मारिका एवं चतुर्वेदी चंद्रिका का लोकार्पण गणमान्य अतिथियों द्वारा किया गया। विश्वविद्यालय पर फिल्म प्रदर्शन के बाद श्री अनिल जी जज साहब ने स्थानीय बांधवों की तरफ से आभार जताया। चाय अंतराल में सभी ने जलपान के साथ ही पंडाल में साहित्य प्रदर्शनी का आनन्द लिया। इसके बाद के सत्र के प्रारंभ में सचिव मुनीन्द्र जी ने अपना विस्तृत प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। निवर्तमान अध्यक्ष डॉ प्रदीप के संबोधन के बाद समाज सेवियों को प्रतीक चिन्ह एवं पुष्प से सम्मानित किया गया। फिर भोजन उपरांत नवनिर्वाचित सभापति ऊषा जी के संबोधन के बाद खुले सत्र में सर्वश्री चितरंजन जी,अजय तिवारी जी, अभिषेक जी, यदुवेश जी, शिशिर जी,यदुवेश जी, डॉ. निशीथ जी ने अपने अपने विचार एवं सुझाव प्रस्तुत किए।

चाय अंतराल में कुछ लोग साहित्य प्रदर्शनी में ज्ञान प्राप्ति कर रहे थे तो कुछ विश्वविद्यालय प्रांगण का अवलोकन कर रहे थे। इसके बाद सभी ने कैम्पस में ही स्थित लक्ष्मी नारायण मंदिर में पूजा-अर्चना एवं भव्य आरती में शामिल होकर प्रसाद ग्रहण किया। इसके बाद आडीटोरियम में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरुआत ब्रजराज से हुई, जिसमें भदावर की प्रसिद्ध होलियो की प्रस्तुति शानदार नृत्यों में दी गई।।

चलौ सखी जमुना पै मची आज होरी,,,,,,।।
मोहन पै रंग डारौ हौ होरी आई,,,,,।।
रंग में बोरों री आज जाय रंग में बोरों री,,,,,,,,,।।

राग रंग, गायन वादन के साथ ध्वनि संगम, भेष-भूषा के समागम में सभी ने मंत्र मुग्ध होकर भरपूर आनंद लिया,कब रात्रि के दस बज गए पता ही नहीं चला, फिर सुस्वादु भोजन व व्यंजन ग्रहण कर बस में बैठ कर वृंदावन गार्डन के लिए रवाना हो गए, तभी अध्यक्षा जी ने आग्रह किया कि कमरे पर पहुंच कर कपड़े बदल कर हांल में पहुंचे, जहां नाच गाना होगा, सभी अपनी थकान भूल कर रात्रि दो बजे तक संगीत का आनंद लेते रहे। महफिल को जबरदस्ती बर्खास्त किया गया कि सुबह जल्दी उठकर भोजपुर मंदिर भी जाना है।

16 जून को सभी दुगने जोश के साथ जल्दी जल्दी तैयार हो कर हांल में नाश्ता करने पहुंचे, फिर हर हर महादेव के जयघोष के साथ बस द्वारा भोजपुर शिव मंदिर के लिए रवाना हुए, मंदिर यूनिवर्सिटी से भी सात किलोमीटर आगे हैं, वहां प्रकृति की गोद में मंद मंद हवा के बीच पहाड़ी पर चढ़ कर केवल पत्थरों से अर्धनिर्मित मंदिर में एशिया के सबसे बड़े शिवलिंग के दर्शन करके,जो स्वर्गीय आनंद प्राप्त हुआ वो शब्दों से परे हैं। मंदिर से लौट कर यूनिवर्सिटी पहुंचे तो सत्र का प्रारंभ संविधान संशोधन समिति की रिपोर्ट से हुआ, जहां आवश्यक संशोधन सर्वसम्मति से पास हो गये, उसके बाद मोटीवेशन सेशन शुरू हुआ, जिसका संचालन शिक्षाविद संतोष जी ने किया, लखनऊ मंडल के संरक्षक मेजर जनरल अजय जी, कौशल विकास विशेषज्ञ डॉ. सिद्धार्थ, डॉ. अदिति, डॉ. अंजना ने विचारोत्तेजक उदबोधन से युवा वर्ग में समाजिक सशक्तिकरण, तकनीकी प्रगति से तालमेल मिला कर विकास करने के साथ ही सामाजिक संस्कारों एवं परम्पराओं से सामंजस्य स्थापित करने हेतु मार्गदर्शन किया। महासभा के संरक्षक भरत जी ने सामाजिक विघटन, बढ़ते तलाक, शाखा सभाओं के सशक्तिकरण पर मार्मिक विचार रखे। डॉ. प्रदीप जी, मुनीन्द्र जी, संतोष जी, विनीता जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इसके बाद भोपाल समाज के वरिष्ठ जनों का सम्मान किया गया। भोपाल शाखा सभा के अध्यक्ष श्री सुमंत जी सभी सहभागियों एवं अतिथियों का आभार प्रकट किया। इसके बाद स्वागताध्यक्ष संतोष जी आयोजन समिति का परिचय देते हुए स्मृति चिन्ह भेंट किए तथा सभी सहकर्मियों की प्रशंसा करते हुए कहा इन्हीं सबके परिश्रम एवं लगन से अधिवेशन सफलता पूर्वक संपन्न हुआ, सभी सहकर्मियों को भी प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। उसके बाद विभिन्न शाखा सभाओं ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष उषा जी को पुष्प गुच्छ भेंट कर सम्मानित किया। इसके बाद महासभा सभापति ने अपने पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी की घोषणा के साथ ही 35 वां अधिवेशन संपन्न हुआ, भोजन ग्रहण करने के बाद सभी आवासीय परिसर के लिए रवाना हो गए। वृंदावन गार्डन में शाम को प्रसिद्ध होली गायक सौरभ जी (फरौली/लखनऊ) ने अपने अंदाज में होली गायन से जो शंमा बांधी, उनके श्रोताओं में उषा जी, विनीता जी,भरत जी, संतोष जी शामिल रहे। फिर सभी भोपाल की मनोहारी यादों को लेकर अपने अपने घर वापस लौट गए।

– शशांक चतुर्वेदी, भोपाल
दिलीप सिंकदरपुरिया, लखनऊ

सूचना

महासभा कार्यकारिणी की अधिवेशन उपरांत बैठक दिनांक 15 सितंबर 2024 को दिल्ली में आयोजित की जाएगी। सामाजिक हित में आप सभी की उपस्थिति प्रार्थनीय है। अपने आने की पूर्व सूचना अवश्य दें। जिससे आपके आवागमन व आवास की समुचित व्यवस्था की जा सके।सम्पूर्ण जानकारी शीघ्र प्रेषित की जाएगी।

– **शशांक चतुर्वेदी मंत्री,** श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा, मो. : 9826086879

अधिवेशन की शुभकामनाएं

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का 35वा अधिवेशन सफलतापूर्वक संपन्न होने पर महासभा कार्यकारिणी एवं आयोजकों का अभिवादन एवं बहुत-बहुत बधाइयां। चतुर्वेदी महासभा की सभापति श्रीमती उषा चतुर्वेदी द्वारा भोपाल अधिवेशन की घोषणा से ही महासभा सदस्यों में उत्साह की लहर दौड़ गई थी। यह अधिवेशन निश्चित तौर पर अंतरराष्ट्रीय मानकों पर खड़ा उतरा है। सभापति उषा चतुर्वेदी एवं संरक्षक भरत चतुर्वेदी के मार्गदर्शन में पूरी टीम ने बहुत बढ़िया काम किया। श्री संतोष चौबे, श्रीमती विनीता चौबे, सिद्धार्थ चौबे एवं अदिति चौबे ने विशाल हृदयता दिखाते हुए उत्तम आथित्य से सभी प्रतिभागियों मन जीत लिया। रवींद्रनाथ टैगोर यूनिवर्सिटी केंपस की संरचना करियर बनाने वाले छात्रों के लिए ही नहीं अपितु सर्वत्र चतुर्वेदी समाज के लिए एक उपयोगी संसाधन बनकर उभर रहा है। श्री संतोष चौबे द्वारा आरएनटीयू का खेल संकुल एवं ऑडिटोरियम चतुर्वेदी युवाओं के खेलकूद एवं वर्कशॉप के लिए उपलब्ध कराने की घोषणा चतुर्वेदी युवाओं को संगठित करने में मील का पत्थर साबित होगी।

डॉ प्रदीप चतुर्वेदी के नेतृत्व में एवं मुनींद्र नाथ जी के निर्देशन में पिछली कार्यकारिणी ने विषम परिस्थितियों में भी उच्चतम कीर्तिमान स्थापित किए हैं। अब नवनिर्वाचित सभापति उषा चतुर्वेदी एवं महामंत्री शशांक चतुर्वेदी के नेतृत्व में नई कार्यकारिणी पुराने एवं नए सदस्यों का स्वर्णिम मिश्रण है जो समाज को नई ऊंचाइयों की तरफ ले जाने के लिए अग्रसर है। इस कार्यकारिणी में कार्य करने का। शुभ अवसर प्रदान करने के लिए सभापति महोदया का कोटि-कोटि धन्यवाद।

– डॉ. मनीष चतुर्वेदी, कोटा

***

I was very happy and impressed to see the arrangements made by Bhopal sabha for 35th Chaturvedi Mahasabha session at Bhopal.

Staying arrangements were good. Breakfast to Dinner, food was very good, best thing was No Onions. Transport arrangements from station to guest house to meeting place were also very good. Important thing that staff/commety members were very helpful. I thank them all for their cooperation and help for making our stay a memorable stay.

My good wishes, Regards,

– Bharat Bhushan, Lucknow

***

भाई शशांक पालगन आपको श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के महामंत्री पद पर सुशोभित होने की घोषणा के बाद मन प्रफ्फुलित हो गया। आप व भोपाल सभा द्वारा किए गए अभूतपूर्व स्वागत से हम अभिभूत हो गए। भोपाल में जिस प्रकार से स्वागत किया गया अत्यंत सराहनीय है। ठहरने की व्यवस्था अति उत्तम थी। किसी

को भी किसी तरह की शिकायत का मौका नहीं मिला।

सुबह का नाश्ता जिसमें विभिन्न प्रकार के भोग थे। दोपहर का भोजन अत्यंत स्वादिष्ट था। गर्मी में छाछ, कलाकंद के साथ आमरस का मिश्रण स्वादिष्ट था।

रात्रि भोज भी अपने आप में स्मरणीय था। सभी बंधुओ ने अत्यंत स्वाद से सेवन किया। दूसरा दिन अत्यंत महत्वपूर्ण था जिसमे चाय के बाद बाफ़ला, बाटी झोर, चावल, (चूरमा) लड्डू के साथ श्रीखंड अत्यंत स्वादिष्ट था। खाने के अंत में पान की दुकान से मन पसंद पान का स्वाद भी लिया गया। भोपाल सभा द्वारा आतिथ्य सत्कार यादगार रहेगा आदरणीय संतोष चौबे जी विनीता चौबे जी सिद्धार्थ चौबे जी की पूरी टीम ने जिस उल्हास के साथ स्वागत किया। ऐसा लगता था कि जैसे हम सभी किसी बारात में शामिल हैं। भरत चंद जी, ऊषा जी के साथ पूरी टीम को हृदय से बधाईयां देते हैं। माननीय संतोष चौबे जी के मधुर स्वभाव ने हम सभी को अभिभूत कर दिया उनके व्यतित्व की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम होगी। उनकी सहयोगी कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाली विनीता चौबे पूर्व संपादक चतुर्वेदी चंद्रिका ने तो सभा में चार चांद लगा दिए। होली का नाट्य रूपांतर ने हम सभी पर अमिट छाप छोड़ी है टीम में सम्मलित सभी बच्चों को बहुत बहुत बधाई। अभिनंदन आशीर्वाद

इस कार्य क्रम को सफलता पूर्वक शुभारंभ से लेकर समापन तक दिनांक 15/06/2024 को पहला सेशन में सबसे पहले सभी का पंजीकरण हुआ जिसमें नाम के साथ पता फोन नंबर ईमेल एड्रेस लिया गया इसके पश्चात मां सरस्वती की वंदना से प्रथम सत्र का शुभारंभ हुआ इसके पश्चात संविधान संशोधन समिति की रिपोर्ट पर विचार हुआ तथा सभी संशोधन पारित किए गए।

इसके पश्चात महामंत्री जी ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसे सर्वसम्मति के पारित किया गया। मंच पर सभापति श्रीमती ऊषा के साथ संतोष चौबे कुलपति रविन्द्र नाथ टैगोर यूनिवर्सिटी एवं स्वागत अध्यक्ष संतोष जी, श्रीमती विनीता चौबे, मुनींद्र नाथ जी, शशांक जी एवं महेश जी की उपस्थिति के साथ साथ पूर्व अध्यक्ष डॉ प्रदीप जी मंच पर उपस्थित थे सेशन की समाप्ति पर भोजन अवकाश हुआ भोजन के बाद राजा भोजपुर के मंदिर के दर्शन हुए।

साय काल होली के नाट्य रूपांतर का मंचन अवस्मरणीय था

दूसरा दिन अत्यंत ही महत्वपूर्ण है इस सेशन में माननीय संतोष चौबे जी के मेजर जनरल अजय जी के साथ सिद्धार्थ जी के सुझाव अत्यंत सराहनीय है। अगर उन पर अमल किया जाता है तो युवा प्रतिभा का पलायन असंभव होगा। आदरणीय संतोष चौबे जी को बहुत बहुत बधाई अभिनंदन। महासभा की अध्यक्ष द्वारा वृद्धजन सम्मान व प्रतिभा सम्मान एवं भोपाल में आयोजन टीम का परिचय एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मान भी सराहनीय था। पालगन

– **मुकेश चतुर्वेदी,** अध्यक्ष, आगरा

श्री माथुर चतुर्वेदी सभा

***

आदरणीय सभापति महोदया

सादर पालागन।

१५-१६ जून द्विदिवसीय चतुर्वेदी महासभा का ३५ वां अधिवेशन नवीन आकांक्षाओं

संभावनाओं के साथ सानंद

सम्पन्न हुआ। आयोजन समिति ने आगन्तुक बान्धवों

के आतिथ्य में कोई भी कमी

नहीं रखी। विद्वान जनों द्वारा

परिचर्चा सत्र में व्यक्त किए बिचार बहुत ही उपयोगी एवं

प्रशंसनीय लगे।नवीन गठित

कार्यकारिणी समाज हित में

नई ऊर्जा से कार्य करेगी इसी

सद्भावना के साथ,

– हरेश चतुर्वेदी,आगराआगरा रजि० आगरा

***

संपन्न,शिक्षित और जागृत चतुर्वेदी समाज की संपन्नता की झलक महासभा के 35 वें अधिवेशन में भोपाल के चतुर्वेदी समाज ने समयबद्ध अनुशासन प्रबंधन के साथ प्रस्तुत कर समाज को गौरवान्वित किया है तदर्थ अनेकानेक बधाइयां।

– **बीना मिश्रा मैनपुरी/आगरा**

***

उत्कृष्ट व्यवस्था संयोजन,मनोहारी परिवेश,श्रेष्ठतर आवास व्यवस्था,हम चतुर्वेदियों की सबसे महत्वपूर्ण स्वादिष्ट भोजन ,जलपान और स्थानीय यातायात की समर्पित सेवा भावना ने मंत्र मुग्ध कर दिया। विश्वविद्यालय का सुरम्य वातावरण हम शिक्षा और साहित्य के विद्यार्थियों को मन से ऐसा भाया कि शायद ही कभी स्मृति कोष से दूर जा सके।भोपाल पहली बार गया था आप सबकी आत्मीयता से बार बार जाने का मन लेकर लौटा हूं।पठनीय पूंजी पर बिना पढ़े टिप्पणी बेमानी होगी,देर रात घर आया हूं,पहला कर्तव्य भोपाल की संयोजन व्यवस्था को साधुवाद देने का है इस लिए आप सब लोगों को आकाश भर बधाई। नई कार्यकारिणी आदरणीया ऊषाजी के नेतृत्व में बहुत अविस्मरणीय कार्य कर सकेगी ऐसा मेरा विश्वास है।सभी पदाधिकारियों, सदस्यों ,संपादक जी सभी को बधाई।

– **डॉ कुश चतुर्वेदी,** इटावा

***

सभी को मेरा सादर पालागन।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का ३५वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन सफलतापूर्वक संपन्न होने पर सभी का अभिनंदन और धन्यवाद। स्वागताध्यक्ष श्री संतोष चौबे जी, श्रीमती विनीता चौबे जी, श्री

सिद्धार्थ चतुर्वेदी, और श्रीमती अदिति चतुर्वेदी को हार्दिक शुभकामनाएँ। महासभा की सभापति श्रीमती उषा चतुर्वेदी और उनकी पूरी कार्यकारिणी को भी बहुत-बहुत बधाई।

यह मेरा पहला अनुभव था। सुबह ६.०० बजे भोपाल पहुँचने पर श्री पीयूष जी ने पुष्पगुच्छ से सभी आए हुए सदस्यों का स्वागत किया और वृंदावन गार्डन में सभी के रहने की और ख़ान पान की समुचित व्यवस्था की गई। सभी सदस्यों के लिए भोज मंदिर दर्शन हेतु बस सेवा उपलब्ध कराना भी अविस्मरणीय रहा। यह मंदिर 11वीं सदी में राजा भोज द्वारा बनवाना आरम्भ किया गया था, जो आज भी पूर्ण नहीं हुआ है। सभी कार्यक्रमों का समयानुसार संचालन इस अधिवेशन का मुख्य आकर्षण रहा। हमारी होलियों की छोटी और बड़ी बच्चियों द्वारा नृत्य नाटिका प्रस्तुत करना एक अविस्मरणीय आयोजन था।

महासभा के सत्र में एक महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा की गई कि युवाओं को कैसे जोड़ा जाए और इस संदर्भ में काफी विचार-विमर्श हुआ यह देखा गया कि समाज की प्रगति और समृद्धि के लिए युवाओं की भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। उन्हें प्रेरित करने, उनके विचारों को सम्मान देने, और उन्हें नेतृत्व के अवसर प्रदान करने के माध्यम से महासभा युवाओं को सक्रिय रूप से जोड़ने के लिए प्रतिबद्ध है। इस प्रयास से न केवल महासभा की शक्ति और एकजुटता में वृद्धि होगी, बल्कि समाज के समग्र विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा। रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल के सभी सदस्यों का हृदय से धन्यवाद, जिन्होंने रात-दिन मेहनत कर इस आयोजन को सफल बनाया।

– **डॉ. रचना चतुर्वेदी** और
श्री पद्मेश चतुर्वेदी का विशेष आभार।

***

नव निर्वाचित सभापति महोदय द्वारा समाज में एकजुटता का खूबसूरत उदाहरण स्थापित करते हुए आदरणीय श्री सुमंत चतुर्वेदी जी को उपसभापति नियुक्त किया गया। उम्मीद है, ऐसे ही प्रयास समाज को जोड़ने हेतु आगे भी किए जाएंगे। मुंबई सभा सामाजिक हित में लिए गए सभी योजनाओं में महासभा का कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग करेगी।

– **मधुपम चतुर्वेदी,** मुंबई

***

महासभा का भोपाल में आयोजित 35 वॉ अधिवेशन

यह मेरा प्रथम अनुभव था। जिसमें मुझे सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला।भोपाल स्टेशन पर अपनी यात्रा को जैसे ही समाप्त कर बाहर आये तभी चतुर्वेदी महासभा की तख्तियां हाथों में लिए हुये बांधव द्वारा आये हुये अतिथियों को दिशा बताते हुये स्वागत मन को भाव विभोर कर रहा था।

महासभा के आयोजन समिति द्वारा चतुर्वेदी बांधव विशेष रूप से श्री नरेश जी सुमंत जी द्वारा पालागन पालागन का उदघोष रास्ते की थकान को मिटाने में सहायक सिद्ध हो रहा था। वृंदावन गार्डन में पहुंचते ही पीयूष जी द्वारा दिया जा रहा पुष्प गुच्छ मन को और भी भाव विभोर कर गया। वास्तव में श्री संतोष जी के मार्गदर्शन में उनके सभी सहयोगी आयोजन को सफलतापूर्वक संपन्न कराने में अपनी पूरी उर्जा लगाने का प्रयास कर रहे थे। वास्तव में प्रारंभ से लेकर समापन तक आयोजन बहुत ही सुंदर व सराहनीय रहा। आयोजन समिति को बहुत बहुत धन्यवाद। जिसने इतने बड़े आयोजन को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराया।

– **अनुराग चतुर्वेदी (टिन्चू),** कानपुर

***

चतुर्वेदी महासभा के 35वें महाधिवेशन के भोपाल में भव्य आयोजन के लिए भोपाल शाखा सभा के अध्यक्ष भाई सुमन्त जी एवं उनकी समस्त टीम बधाई की पात्र है,आदरणीय संतोष चौबे जी एवं विनीता चौबे जी द्वारा इस आयोजन को सफल बनाने हेतु रविन्द्र नाथ टैगोर यूनिवर्सिटी में आयोजन हेतु स्थान देना एवं इतना भव्य एवं शानदार आयोजन को बहुत ही सफलतापूर्वक संपन्न कराने के लिये तहे दिल से धन्यवाद।

भोपाल पहुँचने पर रेलवेस्टेशन से कार्यक्रम स्थल तक जाने हेतु बस सेवा उपलब्ध कराना,बहुत स्वादिष्ट नाश्ता एवं भोजन कराकर उपस्तिथि हुए बांधवो के दिल को जीत लिया,अधिवेशन में एक से बढ़कर एक कार्यक्रम महासभा द्वारा नई दिशा की राह दिखाना, आदरणीय संतोष चौबे जी द्वारा परिचर्चा एक यादगार पल में शामिल हो गयी,आयोजको द्वारा होली गायन एवं नृत्य के कार्यक्रम ने सभी का मन मोह लिया। समाज के सदस्यों के भोज मंदिर दर्शन के लिए बस सेवा उपलब्ध कराना भी अविस्मरणीय रहा यह मंदिर 11वी सदी में राजा भोज ने बनवाना आरम्भ किया था जोकि आज भी पूर्ण नहीं हो पाया है। नव निर्वाचित सभापति महोदय ने एक नई पहल की शुरुवात कर समाज मे एकजुटता का बहुत खूबसूरत उदाहरण आदरणीय श्री सुमन्त चतुर्वेदी जी आगरा जोकि चुनाव लड़े थे उनको उपसभापति बनाकर दिया है उम्मीद है ऐसे ही कई प्रयास समाज को जोड़ने हेतु आगे भी किये जायेंगे।

– **संजय मिश्रा,** कानपुर

***

भव्य, अविस्मरणीय आयोजन ...श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का अधिवेशन सदैव समाज के लिए आकर्षण का केंद्र रहा है , दूर दराज से आये अपने बांधवो से मिलने की उत्सुकता का एक अलग ही आकर्षण रहता है। इस बार भी भोपाल में हुए भव्य अधिवेशन का आयोजन कुछ इसी तरह की अनुभूति ले कर आया ....एक शानदार कार्यक्रम , भव्य आयोजन ..और भोपाल के बांधवों का स्नेहपूर्ण आतिथ्य हमेशा याद रहेगा ...दूर दराज से

आये बांधवों का रहने का शानदार प्रबंध , और सभी कार्यक्रमो का समयानुसार संचालन इस अधिवेशन का मुख्य आकर्षण रहा ...अपनी होलियों को नाट्य रूपांतरण में प्रस्तुतिकरण देखना मन को आनंदित कर गया ....इस पूरे आयोजन में रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री संतोष चौबेजी एवं उनकी पूरी टीम की जितनी प्रशंशा की जाए कम है वे सभी बधाई के पात्र हैं साथ ही भोपाल शाखा सभा के अध्यक्ष श्री सुमंत जी एवं उनकी टीम का अथक परिश्रम इस अधिवेशन की सफलता की एक अलग कहानी कहता है उन सभी को साधुवाद ....नव निर्वाचित अध्यक्षा श्रीमती उषा चतुर्वेदी एवं सचिव श्री शशांक जी एवं उनकी नई कार्यकारिणी को बहुत बधाई एवं शुभकामनाये आशा ही नही पूरा विश्वास है कि ये नई टीम अपने कार्यकाल में सफलता के नए अध्याय लिखेगी ...साथ ही साथ चतुर्वेदी चंद्रिका के नवनियुक्त संपादक श्री दिलीप जी सिकन्दरपुरिया को भी अनेक शुभकामनाये आप काफी लंबे समय से लखनऊ मंडल द्वारा प्रकाशित चतुर्वेदी संदेश के संपादक हैं और आपकी क्षमताओं से पूरा समाज परिचित है अतः उनके इस अनुभव का लाभ भी चंद्रिका के संपादक के रूप में उन्हें और समाज को मिलेगा....अंत मे एक बार फिर अध्यक्षा उषा जी , शशांक जी एवं समस्त नवनियुक्त कार्यकारिणी सदस्यों को बधाई एवं शुभकामनाये आप सभी के सम्मिलित अथक प्रयास समाज को सदैव प्रगति के पथ पर अग्रसर करे इसी विश्वास अउ आशा के साथ.....

– **संजय होलीपुरिया,** (लखनऊ)

***

महासभा के 35वे अधिवेशन में शामिल होने का सुअवसर मुझे भी प्राप्त हुआ..इसके पूर्व मैं चंद्रपुर अधिवेशन में शामिल हुआ था लगभग 4 दशक पूर्व..तब से अब तक निः संदेह यमुना में बहुत पानी बह चुका है...और वह इस महा अधिवेशन से सिद्ध भी हुआ...समस्त आयोजको को इस को महासफल बनाने के लिए दिल की गहराइयों से वंदन और अभिनंदन।

इस महा अधिवेशन की कुछ बाते ... : युवाओं को महासभा से जुड़ने के लिए कैसे प्रेरित किया जाए.. आदरणीय संरक्षक श्री संतोष चौबे जी का प्रस्ताव कि नव निर्वाचित सभापति महोदया को इसकी शुरुआत सुदूर दक्षिण भारत के प्रमुख शहर बंगलुरु से करनी चाहिए ।निः संदेह बंगलुरु में वर्तमान समय में सर्वाधिक संख्या में युवा अपनी जीविका के लिए पहुंच रहे है और वहां के स्थाई नागरिक भी बन गए है...यह एक सराहनीय विचार है और इसको धरातल पर उतारना ही होगा। महासभा की अन्न पूर्णा योजना को और अधिक मजबूत बनाना जिसका प्रमाण है 3 माह से कम समय में 7 लाख से अधिक की धनराशि इस कोश में जमा हो गई है। हमारी परंपराओं के सतत प्रवाह के लिए समय समय पर कार्य शालाओं का आयोजन करना जिसमे युवाओं से संबंधित कार्यक्रमों को भी जोड़ा जाएगा।

शाखा सभाओं से सीधे संवाद हेतु शाखा सभा प्रकोष्ठ का गठन(इस प्रकोष्ठ के माध्यम से सभी शाखा सभाओ के अध्यक्ष महासभा कार्यकारिणी के सद्स्य) हो जायेंगे।

मूल ग्राम निवासी प्रकोष्ठ के माध्यम से ग्रामों में निवासित बांधवों को महासभा से जोड़ा जाएगा। सभापति महोदया द्वारा आजीवन सदस्य संख्या को दोगुना करने का संकल्प(इस पर बहस की जा सकती है क्यों कि यह संख्या अभी भी अत्यंत कम है) लेकिन शुरुआत का समर्थन तो करना ही चाहिए। आदरणीय विनीता जी द्वारा भागीरथ प्रयास द्वारा 12 खंडों में माथुर चतुर्वेदियों के इतिहास/परंपराओं/ गीत/खान पान का प्रकाशन

इस को सभी समर्थवान बंधुओ को अवश्य क्रय करना चाहिए। उपसंहार सम्पूर्ण कार्यक्रम अत्यंत सफलता पूर्वक संपादित करने के लिए श्री संतोष चौबे जी/ श्री सुमंत जी संग पूरे भोपाल समाज का हार्दिक वंदन अभिनंदन। एक अविस्मरणीय कार्यक्रम जिसकी चर्चा सदैव होती रहेगी। कार्यकारिणी में सभी को समायोजित करना संभव नहीं है जो भी बांधव सदस्य बनाए गए है उनको ढेरो शुभकामनाए

– **मनीष चतुर्वेदी,** इटावा/लखनऊ

***

आप सभी सम्मानित जनों को मेरा सादर पालागन।

भोपाल में हुए भव्य एवं प्रसंसनीय अधिवेशन की आदरणीय सभापति जी एवं समस्त आयोजकों का बहुत बहुत आभार। हालांकि में अधिवेशन में किसी कारणवश शामिल तो नही हो पाया पर फिर भी वीडियो के माध्यम से पूरा अधिवेशन और व्यवस्था जो देखी बहुत ही शानदार व्यवस्था देखने को मिली शामिल न हो पाने का अफसोस भी रहा पर शामिल होना असमर्थता थी लेकिन सारा प्रोग्राम काबिले तारीफ रहा साथ ही श्री संतोष चौबे जी का विशेष सहयोग देखने को मिला जिनकी पूरी टीम ने एकजुट होकर इस कार्यक्रम को सफल बनाने में कई दिन रात एक किए और सबसे बढ़िया कार्यक्रम रहा नन्हे मुन्ने बच्चों द्वारा होली की प्रस्तुति जो कि चतुर्वेदी समाज की धरोहर को सहेजने का सफल प्रयास छोटे छोटे बच्चों ने कर दिखाया ।सभी बच्चों को ढेर सारा प्यार एवं उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं। समाज मे ऐसे प्रोग्राम जगह जगह आयोजित होते रहे यदि तो निश्चित ही हमारे समाज की एक अलग ही पहचान होगी।

अधिवेशन के सफल आयोजन की भूरि भूरि प्रशंसा करता हूँ।

– **अनुराग चतुर्वेदी,** आगरा

संविधान संशोधन की रिपोर्ट

- श्रीमती बीना चतुर्वेदी, जयपुर

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के संविधान में संशोधन हेतु एक समिति का गठन किया गया था।

समिति में पूर्व सभापति डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी, दिल्ली

वर्तमान सभापति श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी, भोपाल

श्री मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी, नोएडा (पूर्व सचिव)

श्री शशांक चतुर्वेदी, भोपाल (तत्कालीन संपादक, चतुर्वेदी चंद्रिका) सम्मिलित थे। समिति ने 20 मई तक समाज से संशोधन हेतु सुझाव मांगे थे। निम्नलिखित आदरणीय बॉधवों के संशोधन प्राप्त हुए। जिन बांधवों के संशोधन हेतु सुझाव प्राप्त हुए उनका हार्दिक धन्यवाद। सभी सुझावों पर समिति द्वारा विचार विमर्श करने के पश्चात निम्नलिखित संशोधन का प्रस्ताव पारित किया गया। जो सभा के सामने प्रस्तुत है।

1– श्री अजय तिवारी अध्यक्ष ग्वालियर शाखा सभा।

2 श्री अजय चौबे, भोपाल

3 श्री हरेश चतुर्वेदी अध्यक्ष प्राचीन श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा आगरा।

4 श्री यदुवेश चतुर्वेदी, लखनऊ

5 श्रीमती पूनम चतुर्वेदी होलीपुरा

6 श्री दिलीप सिकंदरपुरिया लखनऊ

7 श्री संजय मिश्रा कानपुर

8 श्री मुकेश चतुर्वेदी अध्यक्ष माथुर चतुर्वेदी शाखा आगरा

– **शशांक चतुर्वेदी,** महामंत्री

परिवार मध्यस्थता समिति

आज के समय काल खंड को देखते हुए महासभा द्वारा परिवार परामर्श समिति का गठन किया गया है। जिसमें समाज के दो वरिष्ठ आदरणीय विष्णुकांत जी व भरत जी व एक वरिष्ठ अनुभवी महिला बीना जी व अन्य दो अन्य सामाजिक रूप से प्रतिष्टित योग्य महिलाओं को स्थान दिया गया है। उक्त समिति में महासभा के संरक्षक होने साथ न्यायिक सलाहकार हेतु भरत जी का सहयोग लिया गया है। समिति निम्नानुसार है :–

1. श्री विष्णु कांत चतुर्वेदी (नोएडा)
2. श्रीमती बीना मिश्रा (आगरा)
3 . श्रीमती नीलिमा चतुर्वेदी (कानपुर)
4. नीतिका चतुर्वेदी (गुरुग्राम)5. भरत चतुर्वेदी (भोपाल)

– **शशांक चतुर्वेदी,** महामंत्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

सूचना

पालागन। यह जानकर हम सब हर्षित है कि सभी लोग सदस्यता अभियान को सफल बनाने में लगे हैं। लेकिन हम सब को प्रक्रिया को भी जानना होगा कि सबसे पहले हम यू पी आई से रु 501/ भेजते हैं तो आपको उसकी रसीद भेज दी जाएगी।फिर पूर्ण रूप से भरा हुआ भावी सदस्य द्वारा हस्ताक्षरित सदस्यता फार्म को किसी कार्यकारिणी सदस्य द्वारा अनुमोदित कराकर किसी पदाधिकारी को भेजा जाएगा, उसके बाद उचित अंतराल पर कार्यकारिणी मीटिंग में मान्यता मिलने पर ही सदस्यता पूर्ण होती हैं। व्हाट्सएप्प पर भेजे फार्म मान्य नहीं होगा।

– संपादक

कार्यकारिणी की प्रथम बैठक की कार्यवाही
दिनांक 16 जून 2024

सर्वप्रथम चतुर्वेदी समाज की कुलदेवी महाविद्या एवं चर्चिता देवी को नमन करके बैठक प्रारंभ की गयी। सचिव शशांक द्वारा सभापति की अनुमति से बैठक का संचालन किया गया। आदरणीय सभापति द्वारा संरक्षकों का परिचय सम्मानिय सदस्यों से कराया गया तथा सभापति जी एवं सदस्यों द्वारा तालियों से उनका स्वागत किया। उसके उपरांत माननीय सचिव द्वारा मनोनित पदाधिकारी एवं सदस्यों से आग्रह किया कि वे स्वयं अपना परिचय बैठक में सभी को अवगत कराये। महासभा के सदस्यों के परिचय के पश्चात सभापति द्वारा महासभा का सदस्यता अभियान चलाने हेतु सुझाव मांग विस्तृत चर्चा की गई। नये सदस्यों ने सर्वसम्मत से सहयोग करने का विश्वास दिलाया।

महासभा के बैंक खाते में हस्ताक्षरकर्ताओं के नाम में परिवर्तन का प्रस्ताव पारित किया गया। अब वर्तमान में श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी

श्री ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी
श्री शशांक चतुर्वेदी
खाते नं. – 1006238340
आनंद विहार शाखा
सेंट्रल बैंक, दिल्ली में हस्ताक्षरकर्ता होंगे।

सभी नवीन पदाधिकारी अपना दायित्व शीघ्र ही अपना दायित्व ग्रहण करेंगे। दायित्व संबंधी औपचारिकता शीघ्र ही पूरी कर ली जायेगी।

कार्यकारिणी में चयनित सभी सदस्यों के नाम, फोन नं. ई-मेल एकत्र किया जाए।

श्री देवेन्द्र नाथ जी, गोंदिया ने प्रस्ताव दिया की शाखा सभा व महासभा के समाजस्य हेतु सभी प्रदाधिकारीयों को अलग-अलग प्रांतो का प्रभार दिया जाए।

सभापति ने इस चर्चा में भाग लेते हुए यह प्रस्ताव किया कि जिन शहरों में शाखों सभा का गठन न हुआ हो। उस शहर में शाखा सभाओं का गठन किया जाए। तथा इस हेतु सम्मलित प्रयास किये जाये।

बैठक के अंत में सभा के महामंत्री श्री शशांक जी ने सभी का आभार व्यक्त किया गया। साथ ही दिवंगत बांधवों को दो मिनट का मौन रख कर श्रद्धांजलि दी गई। बैठक अनिश्चित काल के लिये स्थगित की गयी।

विवरण प्रस्तुति
संलग्नः-उपस्थिति पत्रक

– शशांक चतुर्वेदी, सचिव

श्री माथुर चतुर्वेदी प्रतिभा सम्मान

श्री संतोष चौबे, (भोपाल)
श्रीमती विनीता संतोष चौबे (भोपाल)
श्रीमती आभा सतीश चतुर्वेदी (नागपुर)
डॉ. अपूर्व चतुर्वेदी(फिरोजाबाद)
डॉ. मीनाक्ष चतुर्वेदी (भोपाल)
सुश्री सुरभि मिश्रा (जयपुर)
श्री विकास चतुर्वेदी (चुन्ना भैया) कानपुर
श्री शिवजी (कोटा)
डॉ. निखिल चतुर्वेदी (आगरा)
श्री समर्थ चतुर्वेदी, (भोपाल)
श्री विवेक चतुर्वेदी, (मुम्बई)

श्री माथुर चतुर्वेदी वरिष्ठ सम्मान

श्री हृदय नाथ चतुर्वेदी
श्री हीरालाल चतुर्वेदी
श्री डॉ. दिवाकर नाथ चतुर्वेदी
श्रीमती विमला चतुर्वेदी पत्नी स्व. जयप्रकाश चतुर्वेदी
श्रीमती कुमुद चतुर्वेदी पत्नी स्व. भोलानाथ चतुर्वेदी

कपूर के पौधे के वास्तु एवं ज्योतिषीय लाभ

- **सुचित्रा चतुर्वेदी**, लखनऊ

हम सभी अपने घर की पूजा में कपूर जलाते हैं लेकिन क्या आपको पता है कि कपूर कहां से आता है? कैसा होता है इसका पौधा? क्या इस पौधे को घर में लगा सकते हैं, लगा लिया तो क्या फायदे होंगे? आजकल जो प्रचलित कपूर हम लाते हैं वह केमिकल्स के बने होते हैं। कपूर एक विशालकाय पेड़ से प्राप्त होते हैं जिनका चिकित्सकीय लाभ कमाल का होता है। केमिकल्स वाले कपूर में मेडिसिनल वैल्यू बहुत कम होती है। कपूर का पेड़ लंबे समय तक चलने वाला सदाबहार वृक्ष है।

इसका वृक्ष भारत, श्रीलंका, चीन, जापान, मलेशिया, कोरिया, ताइवान, इन्डोनेशिया आदि देशों में पाया जाता है। कपूर के पेड़ की लम्बाई 50 से 100 फीट तक होती है। इसके फूल, फल तथा पत्तियां सभी आकर्षक होते हैं। इसे सजावटी पेड़ के रुप में भी लोग अपनाते हैं। इसकी पत्तियां बड़ी, सुन्दर और लालिमा व हरापन लिए होती हैं। वसन्त ऋतु में इसमें छोटे-छोटे खुशबूदार फूल लगते हैं। इसके फल भी बड़े मोहक होते हैं।

कपूर के पेड़ की लकड़ियां फर्नीचर के काम में भी लाई जाती हैं। यह काफी मजबूत और टिकाऊ होती है। इसके पेड़ से प्राप्त लकड़ियों को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर, तेज आंच पर उबाला जाता है फिर भाप और शीतलीकरण विधि से कपूर का निर्माण होता है। इससे अर्क और तेल भी बनाया जाता है, जिसका प्रयोग प्रसाधन एवं औषधि कार्यों में होता है। आयुर्वेद, एलोपैथी और होमियोपैथी दवाइयों में भी कपूर का प्रयोग होता है। इसकी तासीर ठंडी है। कपूर और गाय के घी से काजल भी बनाया जाता है। यह आंखों के लिए बड़ा गुणकारी होता है। कपूर के पौधे को हम अपने घर, बाहर, बगिया, गमले आदि कहीं भी किसी भी जगह पर लगा सकते हैं। कपूर का पौधा अच्छी सेहत का भंडार और वरदान है। कपूर के पौधे के संपर्क में जो रहता है तो वह हमेशा स्वस्थ रहता है। कपूर का पौधा पर्यावरण को शुद्ध करने में बहुत बड़ी मदद करता है। कपूर का पौधा हमें प्राण वायु प्रदान करता है।

वास्तु और ज्योतिषीय फायदे : कपूर का पौधा लगाने से घर से बीमारियां दूर हो जाती हैं। कपूर का पौधा घर में लगाने से आसपास की सभी नकारात्मक ऊर्जा समाप्त हो जाती हैं। कपूर का पौधा अपनी सुगंध से चारों ओर के वातावरण को खुशबूदार बना देता है। कपूर का पौधा धन की आवक को आकर्षित करता है। कपूर का पौधा रिश्तों में मिठास लाता है। कपूर का पौधा घर में रखने से खुशियों का आगमन होता है। कपूर का पौधा घर और घर के सदस्यों को नजर से बचाता है।

कपूर का पौधा घर में रखने से बुरी आत्माएं घर से दूर रहती हैं। कपूर का पौधा घर के किसी भी कोने में रख सकते हैं यह पूरे घर के वास्तु दोष को हर लेता है। घर के बाहर रख रहे हैं तो इसे प्रवेश की तरफ से द्वार के दाएं तरफ रखें। कपूर का पौधा घर के मंदिर के आसपास भी रख सकते हैं। इससे पूजा का फल दो गुना हो जाता है। कपूर का पौधा तरक्की लाता है सदस्यों के बीच की तकरार को खत्म करता है। कपूर का पौधा सेहत के लिए तो अत्यंत फायदेमंद है ही मन और आध्यात्मिक शांति के लिए भी आश्चर्यजनक रूप से लाभकारी है।

उम्रदराज...

- **शालिनी**, लखनऊ

उम्र को दराज़ में रख दें
खो जाएं ज़न्दिगी में
मौत का इन्तज़ार न करें
जिनको आना है आए
जिसको जाना है जाए
पर हमें जीना है
ये न भूल जाएं
जिनसे मिलता है प्यार
उनसे ही मिलें बार बार

महफिलों का शौक रखें
दोस्तों से प्यार करें
जो रिश्ते हमें समझ सकें
उन रिश्तों की कद्र करें
बंधें नहीं किसी से भी
ना किसी को बँधने पर
मजबूर करें
दिल से जोड़ें हर रिश्ता
और उन रिश्तों से दिल से जुड़े रहें

हँसना अच्छा होता है
पर अपनों के लिये
याद आएं कभी अपने तो
आँखें अपनी नम भी करें
ज़न्दिगी चार दिन की है
तो फिर शिकवे शिकायतें
कम ही करें
उम्र को दराज़ में रख दें
उम्रदराज़ न बनें

मैं बेचारा लोटा

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी, भोपाल

रसोई घर में भोजन बनाने के लिए जिन बर्तनों की आवश्यकता महत्वपूर्ण होती है, उन्हें में से एक में अत्यंत महत्वपूर्ण बर्तन लोटा हूँ। मेरी अनु उपस्थिति में गृहणी को भोजन बनाने में कठिनाइयाँ आ सकतीहै। मैं यह नहीं कह रहा कि मेरी अनुपस्थिति भोजन बन नहीं सकता लेकिन असुविधा तो जरूर होगी। व्यक्ति दुनियाँ में आता है और चला जाता है। व्यक्ति के न रहने से दुनिया का वह कार्य जो व्यक्ति करता था रुक नहीं जाता। कार्य भी होता है वह दुनियाँ भी चलती है। यही मेरा हाल है। एक दृष्टिसे अत्यंत महत्वपूर्ण हूँ, दैनिक दिनचर्या के सारे काम कार्य में करताहूँ। सुबह उठने से लेकर रात सोने तक सैकड़ो काम कर देता हूँ। सोचिए आप जब सो कर उठे निस्तार के लिए खेत में जाना है तो आप क्या लेकर जाएंगे मेरा ही उपयोग करेंगे ना। हो गया मेरा कार्य प्रारंभ। या आप कहेंगे प्लास्टिक की बोतल ले जाऊँगा यह मग ले जाऊँगा, पर दोस्तों इन सब की उत्पत्ति मेरे बाद ही हुई है। आपके हाथ में मुझे देखकर लोगों को पूछने की आवश्यकता नहीं पड़ती कि आप कहाँ जा रहे हैं? मैं मौन रहकर भी सब कुछ कह देता हूँ।

राम भरोसे तुमसे कछु काम हतों'
बताओ, दद्दा'
पहले तुम निस्तार करिआओं तवई बात कर लेंगे
मुझे देखकर समझ गए ना दद्दा। नाहि तो 10 मिनट खा जाते।

अब सभी समझ गए होंगे मेरे महत्व को। लेकिन फिर भी अपना पूरा परिचय देना एक भद्र व्यक्ति का कार्य है। मेरी गिनती भी इसी में होती है।

आपका अभिन्न साथी लोटा। मैं दुनिया का सबसे प्राचीनतम पात्र हूँ। मेरा अस्तित्व ताम्र पाषाण काल से है। सवालदा संस्कृति तथा जोर्दसंस्कृति से भी मेरा सम्बन्धहै। इस समय मैं एक मिट्टी का पात्र था। दूसरी सहस्त्रावदी ईसा के पूर्व उसी समय से उपयोगी रहा हूँ। मेरी उपयोगिता तरल पदार्थ को संचय करने में अधिक होती है। फिर तो यह दुनिया का चलन है अपने अनुसार किसी भी चीज का उपयोग कर लेना। उदाहरण के लिए कोई मेरे अन्दर दही भर देता, अरे भाई सिर्फ इतना ही नहीं दही जमा भी देते हैं। मथानी डालकर मक्खन निकाल लेते।

क्योंकि आजकल का मनुष्य ज्यादा प्रतिभाशाली है। हर वस्तु में अपनी प्रतिभा दिखा देता है। फिर नया अविष्कार करने का श्रेय लेने के लिए सोशल मीडिया का सहारा लेता है।

मेरे नामकरण भी अपने-अपने प्रदेश के अनुसार है। हिंदी प्रदेशों में लोटा कहलाता हूँ। उड़िया और उर्दू में मुझे अलग नाम से पुकारते। मैंने कहा था ना कि थोड़ा सा अपनी बुद्धि का उपयोग करके प्रतिभाशाली कहलाना चाहतेहै। मेरे उदर के ऊपर. एक नली लगा दी लोग बन गया टोटीदार लोटा। नाम के साथ रूप परिवर्तन।

मेरे इस रूप परिवर्तन को लोग झाड़ी कहते हैं। उर्दू और उड़िया में यही लोटा कहलाता है।

मैं एक साथ कई उद्देश्यों को पूरा करता हूँ यदि मैं तॉबे का बना हुआ हूँ तो धार्मिक कार्यों में प्रयोग लाया जाता हूँ। मैं पवित्र पात्र बन जाता हूँ। धार्मिक पूजा पद्धति में कलश के रूप में मेरी ही स्थापना होती। भगवान गणेश का आसन में ही रहता हूँतब मुझे अपने ऊपर गर्व महसूस होता है।मैं प्रथम पूज्य श्री गणेश का उच्च आसन हूँ। अरे एक बात तो भूल गया जब बेटी का कन्यादान माता-पिता मंडप के नीचे लेटे हैं , उसे समय बार और बधू के हाथ मिलाकर मेरे द्वारा ही जल प्रदाय किया जाता है। कितना पवित्र कार्य है इसके लिए मैं अपने को सौभाग्यशाली मानता हूँ।

प्राचीन चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद में मेरे अन्दर संचित किया हुआ जल स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभकारी होता है। विशेष कर मधुमेह के रोगियों के लिए यह जल अमृत के समान है।

इतना प्राचीनतम होने के बाद भी मैं विलुप्त होने की कगार पर हूँ। मेरा रूप परिवर्तन करके मुझे अलग-अलग धातुओं में बनाए जाने लगा लेकिन उपयोगिता अभी भी बनी हुई है। प्राचीनतम पात्रो में मै ही एक ऐसा पात्र था। जिसका उपयोग झोपड़ी से लेकर महलों तक होता था और आज भी यही स्थिति है। ना राजा रहे ना राजमहल। मेरे टोटेदार वाले रूप में राजमहलों में सुंदरिया अपने कोमल कोमल हाथों और उंगलियों से सहलाती हुई शराब परोसती थी।

मैं इसलिए प्रसन्न नहीं था कि मेरे अन्दर मदिरा संचित की जाती थी। इससे मैं दुखी था लेकिन प्रसन्नता इस बात की थी मुझे सुंदरियॉ और राजा पसन्द करते।

मेरा जब रूप परिवर्तन हुआ तब मेरा नाम भी बदल गया मुझे बंगाल में बोदना तथा केरल में किन्डी कहते हैं।

आप यह ना कहना कि अपनी प्रशंसा के गीत गा रहा है मगर क्या करुँ भाई आजकल दुनिया का चलन है। अपना प्रचार खुद ही करना पड़ता है लोगों को दूसरी तरफ देखने की फुर्सत नहीं।

अब मेरी थोड़ी व्यथा भी सुन लो। मेरी सारी उपयोगिताओं को भूलकर मेरी एक उपयोगिता मनुष्य के लिए वह भी आवश्यक है फिर भी मुझे हासपरिहास का साधन बना लिया। वह भी मेरी बनावट के कारण। मैं एक स्थान पर आराम से बैठा रहूँ हिलडुल ना करूं, क्योंकि मेरे अंदर तरल पदार्थ है वह छलक ना जाए इसलिए मेरे पृष्ठ भाग के निचले हिस्से में एक पिंडी सी लगा देते हैं ताकि मैं स्थिर रहूँ। यदि वह निकल गई तो मैं स्थिर नहीं रह सकता। तब लोग मुझे बिना पेंदी वाला कहते हैं।

लेकिन भाइयों मेरे ऊपर मुहावरा कर दिया बेपेंदी का लोटा। इन शब्दों का प्रयोग उनके लिए किया जाता है जो अपनी आस्था तथा निष्ठा बदलते रहते हैं कभी किसी के साथ कभी किसी के साथ। और यह निष्ठा और आस्था का प्रश्न अधिकतर राजनीतिक क्षेत्र में आता है।

जिस दल की सरकार उसी दल के नुमाइदे हम। अकबरी लोटा शहंशाह अकबर को एक ब्राह्मण का लोटा पसंद आ गया और उन्होंने वह उसे ले लिया। लेने के बाद वह उसी लोटे से वजू करते थे। बस मेरी कीमत बढ़ गई कहलाने लगा अकबरी लोटा। किसी वस्तु के दाम ज्यादा है लोग मजाक में पूछते क्या यह अकबरी लोटा है जो इतना महंगा। देखिये हो रही ना मेरी छीछलेदर।

मैंने पूर्व में भी आपसे कहा मैं सुबह से लेकर रात तक आपके साथ रहता हूँ।सुबह-सुबह मैं आपके शरीर की स्वच्छता के लिए उपयोग किया जाता हूँ। आप गुसलखाने जाएंगे वहां मैं आपको स्नान करने के लिए उपलब्ध रहूँगा। स्नान के बाद पूजन करना है तो मैं भगवान सूर्य को जल देने के लिए तैयार हूँ। मेरे लेने के ढंग से भी लोग मुझे पहचानते हैं कि मेरा क्या उपयोग हो रहा है।

यदि किसी को यह दिख जाए कि मेरा मुँह उंगलियों से पकड़ कर लटका कर ले ले जाया जा रहा है। लोग समझ जाएंगे मुझे खेतों में ले जाया जा रहा है या फिर शौचालय में।

यदि मैं स्वच्छ कर और उसमें जलअन्य द्रव्य पदार्थ भरकर हथेली पर ले जाया जा रहा है समझ लो पवित्र कार्य के लिए जा रहा हूं। वर्तमान समय में ताम्र धातु की कीमतें बढ़ रही है मेरी बनावट में इस धातु का प्रयोग कम होता है। स्टील धातु का प्लास्टिक का पीतल का अल्युमिनियम का में सभी धातुओं का बनने लगा और सबसे अंतिम बनता हूं चांदी का जो अपना धनाढय होने का प्रदर्शन करते हैं।

मेरी उत्पत्ति के बाद मूल भारती होने के कारण पश्चिमी देशों ने गिलास का प्रचलन प्रारंभ किया पर वह मुझे नहीं हरा पाए क्योंकि उनका उपयोग सीमित है। ना पूजा में काम आता है ना स्वच्छता में काम आता है और ना अन्य वस्तु में संचय करने में। मैं एक रेखीय हूँ क्योंकि गोल हूँ इसलिए मेरे अन्दर रखा हुआ जल पीने से लोगों को लाभ होता है। जब मेरे अंदर जल संचित किया जाता है तो जल मेरे रूप जाकर ढल जाता है अर्थात मेरा आकर ले लेता है गोल वस्तु में रखा हुआ पदार्थ उपयोगी होता है। देखिए मैं खुलकर अपनी बात बेबाक अपनी कहानी आपके सम्मुख रख दी मेरा आपसे आग्रह है आप मेरे कार्यों का हास्य मैं ना ले। किसी प्रतिभाशाली कवि ने मेरे प्रयोग की महिमा काव्य में लिखी है आप भी पढ़कर आनंद उठाइए

पट्ट झाड़ कें बिछी चटाई,
सिल लोढ़ी भीतर सों आई।
ठंडे जल कुआ के आये,
भर लोटा छिड़काव कराये।

हो हल्ला होवे है भारी,
अब प्रसाद की है तैय्यारी।
टीप लगामें बृज के राजा,
लोटा लैवे जल्दी आ जा।

भर लोटा ठंडायी पावें,
बड़ी सुरीली सभी बतावें।
निकर सरोंता कटी सुपारी,
बनै टैम होवै तय्यारी।

लोटा लै कैं दल चल दीन्हो,
कौन्हो पकड़ खेत को लीन्हो।
झूमत भये लौट कें आमैं,
चेहरा ते सिगरे मुस्कावे

बुढापा पैरों से शुरु होता है

- श्री लोकेन्द्र चतुर्वेदी, गाजियाबाद

रोज कम से कम 90 मिनट लगातार पैदल चलने पर ब्लड शुगर लेवल को नियंत्रित रखने में मदद मिलती है व यही सीनियर सिटीजन्स हेतु सबसे अच्छी एक्सरसाइज है। इस लेख में पैदल चलने के और भी फायदे बताए हैं। मैं पैरों के नर्व्स और वेंस के लिए स्ट्रेच एक्सरसाइज़ कर लेता था, जो अब से नही करूँगा। क्योंकि पिंडली को कुछ लोग उसमें पाए जाने वाले नर्व्स और वेंस के कारण उसे छोटा दिल जो कहते है

बुढ़ापा पैरों से शुरू होकर ऊपर की ओर बढ़ता है ! अपने पैरों को सक्रिय और मजबूत रखें !! जैसे-जैसे हम ढलते जाते हैं और रोजाना बूढ़े होते जाते हैं, हमें पैरों को हमेशा सक्रिय और मजबूत बनाए रखना चाहिए। हम लगातार बूढ़े हो रहे हैं, वृद्ध हो रहे हैं, मगर हमें बालों के भूरे होने, त्वचा के झड़ने (या) झुर्रियों से डरना नहीं चाहिए।

दीर्घायु के संकेतों में, जैसा कि अमेरिकी पत्रिका प्रिवेंशन (रोकथाम) में मजबूत पैर की मांसपेशियों को शीर्ष पर सूचीबद्ध किया गया है, क्योंकि यह सबसे महत्वपूर्ण और आवश्यक है।।

डेनमार्क में कोपेनहेगन विश्वविद्यालय के एक अध्ययन में पाया गया कि वृद्ध और युवा दोनों, निष्क्रियता के दो हफ्तों के दौरान, पैरों की मांसपेशियों की ताकत *एक तिहाई कम हो सकती है *।

जैसे-जैसे हमारे पैर की मांसपेशियां कमजोर होती जाती हैं, ठीक होने में लंबा समय लगता है, भले ही हम बाद में पुनर्वास और व्यायाम करें।

इसलिए, चलने जैसे नियमित व्यायाम बहुत जरूरी हैं।

पूरे शरीर का भार पैरों पर रहता है और शरीर आराम करता है। पैर एक प्रकार के स्तंभ हैं, जो मानव शरीर के पूरे भार का वहन करते हैं। दिलचस्प बात यह है कि किसी व्यक्ति की 50% हड्डियाँ और 50% मांसपेशियाँ दोनों पैरों में ही होती हैं। मानव शरीर के सबसे बड़े और मजबूत जोड़ और हड्डियां भी पैरों में होती हैं।

मजबूत हड्डियां, मजबूत मांसपेशियां और लचीले जोड़ आयरन ट्राएंगल का निर्माण करते हैं जो सबसे महत्वपूर्ण भार यानी मानव शरीर को वहन करता है।

७०% मानव गतिविधियां और कैलोरी बर्निंग इन्हीं दो पैरों से होते हैं।

क्या आप यह जानते हैं? जब इंसान जवान होता है तो उसकी जांघों में इतनी ताकत होती है कि वह 800 किलो की छोटी कार को उठा सके।

पैर शरीर की हरकत का केंद्र है।

दोनों पैरों में मिलकर मानव शरीर की ५०% नसें, ५०% रक्त वाहिकाएं और ५०% रक्त उनमें से बहता है।

यह सबसे बड़ा संचार नेटवर्क है जो शरीर को जोड़ता है।

केवल जब पैर स्वस्थ होते हैं तब रक्त की कन्वेंशन धारा सुचारू रूप से प्रवाहित होती है, इसलिए जिन लोगों के पैर की मांसपेशियां मजबूत होती हैं, उनका हृदय निश्चित रूप से मजबूत होता है।

बुढ़ापा पैरों से ऊपर की ओर जाता है।

जैसे-जैसे व्यक्ति बूढ़ा होता है, मस्तिष्क और पैरों के बीच निर्देशों के संचरण की सटीकता और गति कम होती जाती है, इसके विपरीत जब कोई व्यक्ति युवा होता है तो यह बहुत तेज और सटीक होती है।

इसके अलावा, तथाकथित अस्थि उर्वरक (कैल्शियम) समय बीतने के साथ खो जाएगा, जिससे बुजुर्गों को हड्डियों के फ्रैक्चर का खतरा अधिक हो जाएगा।

बुजुर्गों में अस्थि भंग आसानी से रोग जटिलताओं की एक श्रृंखला को ट्रिगर कर सकता है ।

* पैरों की एक्सरसाइज करने में कभी देर नहीं करनी चाहिए, 60 साल की उम्र के बाद भी यदि आप नियमित व्यायाम करें तो परिणाम चौंकाने वाले होते हैं।

हालांकि समय के साथ हमारे पैर धीरे-धीरे बूढ़े हो जाएंगे, लेकिन हमें पैरों का व्यायाम करना जीवन भर का काम बना लेना चाहिए। केवल पैरों को मजबूत करके ही आगे बढ़ती उम्र को रोका या कम किया जा सकता है।

अस्थि रोग विशेषज्ञ डॉ रमेश कालरा बताते हैं कि कृपया रोजाना कम से कम 30-40 मिनट टहलें ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि आपके पैरों को पर्याप्त व्यायाम मिले और यह सुनिश्चित हो सके कि आपके पैरों की मांसपेशियां स्वस्थ रहें।

मस्त रहें, स्वस्थ रहें, प्रसन्न रहें और नियमित 2 km पैदल अवश्य चलें

सभापति का उद्बोधन

- ऊषा चतुर्वेदी, भोपाल

मैं खुश हूँ और सदा खुश रहती हूँ
मैं लापरवाह हूँ लेकिन दूसरों की परवाह करती हूँ।
मालूम है कोई मोल नही मेरा भी फिर भी
आप जैसे अनमोल लोगों से रिश्ता रखती हूँ।
और आप सभी लोगों को मैं आदर के पालागन करती हूँ।

मध्य प्रदेश की राजधानी जहॉ देश की राजनीति प्रभावित ,तथा संचालित होंती है। ऐसी भोपाल नगरी आप सभी लोगो का स्वागत करती हूँ। मेरा सौभाग्य है कि देश के विभिन्न भागों में निवास करने वाले बाँधवों एवं भगिनियॉ निमंत्रण स्वीकार कर भोपाल पधारें मैं सभी का स्वागत करती हूँ। समाज कें सभी सम्मानीय मतदाताओं ने मेरे ऊपर विश्वास कर मुझे सभापति के पद पर निर्वाचित किया। मैं सभी का हार्दिक आभार एवं धन्यवाद प्रेषित करती हूँ।

समाज हो अथवा राजनीति या अन्य संस्था सभी में संगठन का अपना अलग ही महत्व होता है और यह निर्भर करता है उसे पद पर आसीन व्यक्ति की सक्रियता कर्तव्य और दायित्व के निर्वहन पर। मैं आप लोगों को विश्वास दिलाती हूँ निश्चित ही जिस विश्वास से आपने मुझे निर्वाचित किया आपका विश्वास टूटने नहीं दूंगी। मातृशक्ति आबादी की आधी शक्ति होती है और मैं इससे पूर्व महिला प्रकोष्ठ की राष्ट्रीय संयोजक थी, एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष थी। अपने दायित्वों के प्रति समर्पित भाव से मैंने खरा उतरने का प्रयास किया। कितनी सफल रही। यह आपने मूल्यांकन किया होगा।

देश की आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाली मातृशक्ति भी यहाँ उपस्थित है। मातृशक्ति के जागरूक और सशक्त हो जाने से समाज का विकास होता है तथा संस्कृति तथा परंपराओं की रक्षा होती है । वर्तमान समय क्षरण होते हुए संस्कार बचाए रखने की चुनौती हम सभी बहनों के सम्मुख है।

निर्वाचित होने के पूर्व भी मैंने आप सभी लोगों के सामने अपनी बात रखी थी और आज भी उसी बात पर दृढ़ निश्चित हूं। मेरी पहली प्राथमिकता महासभा की आजीवन सदस्यता बढ़ाना है। चुनाव के समय सत्र की सदस्यता बढ़ती है लेकिन सत्र समाप्त हो जाने के बाद वह भी समाप्त हो जाती है। एक जागरूक समाज के लिए यह संकेत उचित नहीं है।

मुझे इस बात की भी खुशी है कि मैं जहाँ जहाँ प्रवास पर गई लोगों ने सदस्यता के प्रति अपनी रुचि प्रदर्शित की और मुझे उम्मीद है कि इस सत्र में हमारी आजीवन सदस्यता दुगनी तो अवश्य ही करेंगे। और इस कार्य के लिए मैं अपनी सहयोगी टीम पर तथा शाखा सभाओं से आग्रह करती हूँ। महासभा की नींव हमारी शाखाएं सभाएं उन्हें भी सक्रिय एवं जागरूक होना पड़ेगा।

हमारे पूर्व की जो सदस्य सूची है उसे दुरुस्त करना भी आवश्यक है और यह कर आप लोगों के बिना सहयोग के नहीं हो सकता।

जो शाखाएं सभा सुशुप्त अवस्था में हैं, उन्हें सक्रिय होना पड़ेगा। हमारी बहुत सी बहनें परिवार में आर्थिक सहयोग देने के लिए अपना छोटा व्यवसाय चलाती है। उसको और कैसे बेहतर ढंग से करें सरकारी योजनाओं का कैसे लाभ लें इसके लिए समय-समय पर जूम के माध्यम से कार्यशालाएं आयोजित करने का निचार सरकारी योजनाएं की जानकारी तथा उसका लाभ कैसे ले भी प्राथमिकता है।

चतुर्वेदी चंद्रिका महासभा का मुख पत्र है उसकी सदस्यता का भी अभियान चला कर सदस्यता की जायेगी ताकि समाज में अधिकांश व्यक्तियों के पास समाज के समाचार पहुंच सके।

चतुर्वेदी चंद्रिका के न पहुंचने की शिकायतें अधिकतर रहती हैं। उसकी व्यवस्था तथा सर्वप्रथम पता ठीक कर सूची सुचारू रूप से बनाई जाएगी और इस काम में आप सभी लोगों का सहयोग लगेगा। निर्वाचन के समय मुझे जानकारी प्राप्त हुई 750 मत पत्र बिना डिलीवरी के वापस आए थे। कारण पता अधूरा था। पता सुधरवाते समय समय पिन कोड अवश्य रूप से लिखें। जितने भी प्रकोष्ठ का गठन होगा सभी प्रकाष्टों को सक्रिय रूप से भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी समाज में आर्थिक संकट से जूझते हुए परिवारों को सहायता अन्नपूर्णा योजना एवं छात्रवृत्ति योजना संचालित होती है। इन दोनों योजनाओं में हर सत्र में बढ़ोतरी होती है। हमारा आग्रह रहतें कि आप सभी दिल खोलकर सहायता हेतु अपना योगदान दें। समाज में देने वालों की कोई कमी नहीं या तो सभा उन तक पहुंच नहीं पाती या उन्हें जानकारी का अभाव रहता है इस समस्या का निदान होगा।

हमारे यहां शादी विवाह में हमारी कुलदेवी महाविद्या देवी व कुलदेवी के लिए भी दान की राशि ली जाती है मेरा आप सभी लोगों से आग्रह है यह राशि आप सीधे महासभा के खाते में भेजें ताकि एक मुश्त राशि वहाँ पहुंचाई जा सके या वहाँ कोई सुधार

कार्य किया जा सके। हम लोगों का सौभाग्य है कि हमने ऐसे समझ में जन्म लिया है जो प्राचीन काल से ही पूर्ण साक्षरता के लिए पहचानी जाती थी। अपनी प्रतिभा, कौशल एवं आचरण दूसरे समाजों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करता था। और आज भी हमारे यहां प्रतिभाओं की कमी नहीं सभी क्षेत्रों में समाज ने अपनी पहचान बनाई तथा सात समंदर पार के क्षेत्र को स्पर्श किया। यह हमारे लिए बड़ी गौरव की बात है। हमारे यहां के नवयुवक और नवयुवतियों की अपनी पहचान है। आवश्यकता इस बात की है हम एक दूसरे को जाने उनके विचारों को समझे फिर मिलजुल कर कदम बढ़ाये। नवयुवक और नवयुवतियों के अंदर भी समाज के प्रति रूझान पैदा करना पड़ेगा। मेरा प्रयास रहेगा युवा प्रकोष्ठ एवं महिला प्रकोष्ठ के माध्यम से हम उन्हीं से उनकी रुचियां को जानकर अपने क्रियाकलापों में सुधार करेंगे। समय के साथ चलेंगे जहां बदलना है वह बदलेंगे भी लेकिन अपनी जड़े नहीं छोड़ेंगे।

बहनों में समझती हूँ, घर परिवार से समय निकालना बहुत कठिन होता है और यदि दोहरी जिम्मेदारी है तो और भी कठिन लेकिन समाज के प्रति हमारे कुछ कर्तव्य हैं उन कर्तव्यों का पालन हमारा दायित्व है। समाज की अपेक्षाएं भी महिलाओं से बढ़ गयी है। सभी लोगों का विश्वास है महिला यदि ठान ले तो कोई भी कार्य कठिन नहीं। संस्कार के संवाहक हमीं लोग है। इसलिए महिलाओं की जिम्मेदारी और बड़ी है। अंत में इतना ही कहना चाहूंगी हमारे मूल गांव जो है धीरे-धीरे उजड़ रहे। जो सम्मानीय बंधु वहां रहते हैं। उनका संपर्क सीमित है मेरा प्रयास रहेगा वह हमसे कैसे जुड़े इस बारे में भी विचार करना। मेरा प्यास रहेगा कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी कार्यकारिणी की बैठकआहुत हो। समाज हित में आप लोगों के बहुमूल्य सुझाव हमेशा आमंत्रित रहेंगे।

चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित सामग्री के बारे में आप अपने विचार से हमें लगातार अवगत कराते रहे, संपादक के नाम पत्र के माध्यम से। आपने मुझे सुना इसके लिए मैं आप सभी लोगों का हृदय से आभार व्यक्त करती हूं। आपके आने से सम्मेलन में बहार आ गई है।

जय समाज जय संगठन

सार्वजनिक विनम्र अपील (18.07.2024)

सम्मानीय बन्धुवर/बहिन जी

सादर पालागन

सजातीय बान्धवों को एक सांकेतिक सहयोग राशि रु २४००० वार्षिक (रु २०००/ – प्रति माह के अनुसार) से विगत कई वर्षों से श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा द्वारा समाजहित के लिए, बांधवों के अमूल्य सहयोग से अन्नपूर्णा एवं छात्रवृत्ति सहायता अपने ही समाज के 41 परिवारों के मध्य प्रदान की जा रही है। वर्तमान में यह सहायता राशि त्रैमासिक अप्रैल, जुलाई,अक्टूबर तथा जनवरी के प्रथम सप्ताह सीधे उनके बैंक खाते हस्तांतरित की जा रही है । वित्तीय वर्ष २०२४-२५ की प्रथम तिमाही (अप्रैल से जून) की सहयोग राशि Rs . 2,46,000/ – बैंक खातों में सीधे भेजी जा चुकी है ।

सहयोग देने वाले बांधवों के नाम तथा उन के द्वारा प्रदत्त सहयोग राशि :-

6. अपनी पौत्री के जन्मदिन के उपलक्ष्य में श्री पंकज जी, लखनऊ द्वारा – Rs . 2400/-
7. श्री दिलीप सिकंदरपुरिया (लखनऊ) द्वारा – Rs,2100/-
8. श्री लोक नाथ जी (लखनऊ) द्वारा Rs.1000/-
9. श्री दीपक जी लखनऊ द्वारा Rs. 5000/-
10. श्री अविनाश जी (होलीपुरा/ कानपुर) Rs-12,000/-
11. आनंद सिंह चतुर्वेदी परिवार (होलीपुरा) की ओर से – (श्री भरत जी (रिषड़ा/होलीपुरा) द्वारा – Rs 25,000/-
12. अपने नाना स्वर्गीय श्री धर्म नारायण चौबे (होलीपुरा) एवं नानी स्वर्गीय श्रीमती रंगो देवी चतुर्वेदी की स्मृति में सौरभ चतुर्वेदी सुपुत्र कैप्टन डॉ प्रवीण चंद्र चतुर्वेदी (मैनपुरी/आगरा) द्वारा 25,000/-
13. अपने पिता स्वर्गीय श्री मोतीलाल चतुर्वेदी (मुख़त्यार साहब) तथा माता स्वर्गीय श्रीमती रूपो देवी चतुर्वेदी की स्मृति में कैप्टन डॉ प्रवीण चंद्र चतुर्वेदी (मैनपुरी/आगरा) द्वारा 25,000/-
14. अपने पुत्र चि आयुष के Redbul Energy (MNC) में area manager दिल्ली NCR के पद पर पदोन्नति के उपलक्ष्य मैं श्री मनोज जी चतुर्वेदी (सागर) द्वारा Rs. 5000/-
15. डॉ मनीष चतुर्वेदी (कोटा) पूर्व राष्ट्रीय संयोजक युवा प्रकोष्ठ द्वारा Rs. 24,000/-
16. समाज रत्न स्व0 खरगराम जी की पावन स्मृति में , उन के पौत्र श्री मदन कुमार चतुर्वेदी (होलीपुरा/कलकत्ता) द्वारा 24000/-
17. अपनी पूज्यनीय माताजी श्रीमती अनुराधा चतुर्वेदी की ओर से उनके तथा स्व मदन मोहन जी के सुपुत्र श्री ऋषभ चतुर्वेदी द्वारा Rs .12,000/-
18. अपनी चाची श्रीमती निधी एवं चाचा श्री मनीष (फरौली/गाजियाबाद) की वैवाहिक वर्षगांठ के शुभ अवसर पर श्री दीपांशु जी सुपुत्र श्री लोकेंद्र जी (फ़रौली/ग़ाज़ियाबाद)

द्वारा Rs.12,000/-

19. श्रीमती निर्मला चतुर्वेदी विनायक कॉम्पलेक्स दादाबाड़ी कोटा द्वारा Rs. 2000/
20. श्री आलोक चतुर्वेदी सुखधाम कॉलोनी कोटा द्वारा Rs . 6000/-
21. श्री विनय चतुर्वेदी प्रतापनगर कोटा द्वारा Rs 6000/-
22. स्वर्गीय प्रो. रमेश चंद्र चतुर्वेदी (मैनपुरी/सिलवासा) की प्रथम पुण्यतिथि (3rd may 2024) स्मृति में श्रीमती उषा चतुर्वेदी (पत्नी) के द्वारा Rs 24,000/-
23. श्री रविकान्त चतुर्वेदी , कोटा - Rs1000/-
24. अक्षय तृतीया के पुनीत पर्व पर अपने पूजनीय माता श्री तथा पिता श्रीं की पुण्य स्मृति में। ; अन्नपूर्णा तथा छात्रवृति सहयोग) श्री केदार नाथ जी जयपुर द्वारा Rs 24,000/-
25. गुप्त सहयोग (भरूच /चेन्नई) Rs 21,000/-
26. श्रीमती कामिनी देवी की पुण्य स्मृति में श्री गजेंद्र चतुर्वेदी (लखनऊ) द्वारा Rs 5100/-
27. श्रीमती कस्तूरी देवी की पुण्य स्मृति में श्री जगदीश जी (भोपाल) द्वारा Rs.5100/-
28. अपनी मौसी स्व प्रेमलता (प्यानो) की पुण्य स्मृति (30.04.2024) में सुश्री हर्षिता सुपुत्री श्री शेखर एवं श्रीमती तारा चतुर्वेदी (चंद्रपुर/इंदौर) द्वारा Rs .12,000/-
29. अपने पूज्य पति स्व. दीपक चतुर्वेदी की पुण्य स्मृति में श्रीमती शशि जी (अजमेरप) द्वारा Rs.5100/-
30. श्री माथुर चतुर्वेदी समुदाय मुंबई द्वारा - Rs.3,00,000/-
31. श्री दिनकर राव चतुर्वेदी (कानपुर) द्वारा -Rs 5100/-
32. अपने बाबा स्वर्गीय प्यारेलाल जी चतुर्वेदी तथा दादी स्व श्रीमती शकुंतला जी की स्मृति में श्रीमती आकांक्षा चतुर्वेदी पुत्री श्री अजय एवं श्रीमती बीना जी (कमतरी/कानपुर) द्वारा Rs 11,000/-
33. अपने माता श्रीमती रेणु जी तथा पिता श्री पदम जी की ५०वीं शादी सालगिरह के उपलक्ष्य में श्री तुषार चतुर्वेदी (तरसोख़र/ लंदन) द्वारा Rs 5100/-
34. अपने पिता श्री स्व. राकेश जी के जन्मदिन की स्मृति में श्री अनुज जी (बिजकोली/ग़ाज़ियाबाद) द्वारा Rs.12,000/-
35 .श्री अनुपम चतुर्वेदी द्वारा अपने पिता श्री अशोक कुमार चतुर्वेदी की स्मृति में Rs1100/-
36. श्री हृदय नाथ जी चतुर्वेदी (होलीपुरा/ भोपाल) द्वारा Rs-11000/-
37. अपनी माता स्व. शकुंतला जी की स्मृति में श्री मनोज चतुर्वेदी (सागर/आगरा) द्वारा - 2100/-
38 . अपने पिता श्री ओंकार पांडे के स्मृति में श्री संजय चतुर्वेदी (होलीपुरा/लखनऊ) द्वारा Rs.5100/-
39. अपने बाबा श्री पृथ्वी नाथ जी स्मृति में हर्ष चतुर्वेदी(अमेरिका) सुपुत्र श्री किशोर चतुर्वेदी (आगरा/भोपाल) द्वारा Rs.12,000/-
40. ताऊजी स्व. कामिनी मोहन जी की पुण्य तिथि (5 जून) पर हर्ष मोहन @मोहित द्वारा अन्नपूर्णा सहायतार्थ 6000/- (र.क्र.- 2238)
41. श्री रुचिर सुपुत्र श्री कमलेश जी, झाँसी -12000/-
42. श्री आनंद जी,प्रयागराज - 11000/-
43. अपने पिता श्री यतीश चंद्र जी स्मृति में श्री दिवस चातुर्वेदी (लखनऊ) द्वारा Rs. 11,000/-
44. श्री रचित सुपुत्र श्री कमलेश जी, झाँसी -12000/-
45. सौ. आरुषी-चि.मृदुल के शुभविवाह (11 मार्च 2024) के अवसर पर श्री राजीव जी (मैनपुरी/ लखनऊ) ने - 2100/
46. स्वर्गीय श्रीमती सुषमा चतुर्वेदी (कछपुरा) पत्नी स्वर्गीय डॉ. श्री यतींद्र नाथ चतुर्वेदी (औरैया/सिकंदरपुर) की स्मृति में उनकी पुत्री डॉ. प्राची चतुर्वेदी (होलीपुरा/भोपाल) द्वारा 5000/- अन्नपूर्णा सहायतार्थ दिए गए।
47. स्व.श्रीमती गीता चतुर्वेदी की स्मृति में श्री दिवाकर नाथ चतुर्वेदी (पुरा/भोपाल) द्वारा 15000/-
48. श्रीमती विमला चतुर्वेदी पत्नी स्व. जयप्रकाश चतुर्वेदी(फरौली/भोपाल) द्वारा- 11000/-
49. श्री अशोक जी एवम् श्री आनंद जी, हवेली होलीपुरा द्वारा अन्नपूर्णा सहायता हेतु - 24,000/-
50. श्री कृष्ण कांत चतुर्वेदी(राघो) 12000/ (-पुरा/हैदराबाद), श्री प्रणव चतुर्वेदी (पंकू)(कमतरी/ हैदराबाद) द्वारा 5000/- एवं श्रीमती बीना मिश्रा(मैनपुरी/आगरा) द्वारा 8000/-

कुल जमा 25000/-

कुल प्राप्त सहयोग राशि योग Rs.8,37,500/-

इस पुण्य कार्य में सहयोग के लिए सादर आग्रह है। सभी से बांधव तथा बहनों से करबद्ध निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में खुले हृदय से सहयोग देने की कृपा करे ।

सहयोग राशि भेजने के लिए :-महासभा खाता विवरणः

Shri Mathur Chaturvedi Mahasabha
Saving A/C no.1006238340
ifs code- cbin0283533
Central bank of india
Branch- Anand vihar delhi

राशि स्थानातंरण के बाद उस राशि की सूचना निम्न नंबर पर अपने दूर भाष तथा email के साथ भेजने की कृपा करें ।

निवेदक : शशांक चतुर्वेदी, मंत्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा, 9826086879
की सहयोग राशि अन्नपूर्णा सहयोगार्थ प्रदान की।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा अधिवेशन, आयोजन समिति, भोपाल

श्रीमती उषा चतुर्वेदी सभापति (भोपाल)
श्री संतोष चौबे, भोपाल – स्वागताध्यक्ष
श्री भरत चतुर्वेदी, संरक्षक (भोपाल)
डॉ. विनीता चौबे, संयोजिका (भोपाल)
श्री शशांक चतुर्वेदी, संयोजक (भोपाल)
श्री सुमंत चतुर्वेदी
सदस्य, शाखा अध्यक्ष (भोपाल)

अन्य सम्मानीय सदस्य

डॉ. अदिति चतुर्वेदी, श्री धनेश चतुर्वेदी, श्री संजय चतुर्वेदी करोंद, श्री अजय चौबे, श्री गजेंद्र पांडे, श्री हरीश चतुर्वेदी, श्री विश्वास कोलार रोड, श्री विकास चतुर्वेदी मौली, श्री नरेश चतुर्वेदी, श्रीमती नीलम चतुर्वेदी, श्री नीरव चतुर्वेदी, श्रीमती पदम रेखा, चतुर्वेदी, श्री नीरज पाठक, श्रीमती सीमा (अयोध्या वायपास), श्रीमती शिवांगी चतुर्वेदी, डॉ. सिद्धार्थ चतुर्वेदी, श्री मुकेश चतुर्वेदी कोलार, श्री धर्मेंद्र चतुर्वेदी, श्री अनिल कुमार चतुर्वेदी (जज सा.), श्री प्रेम चतुर्वेदी (होशंगाबाद रोड), श्री पीयूष चतुर्वेदी, श्री अंबर पांडे, श्री विवेक चतुर्वेदी, श्री ललित चतुर्वेदी कोलार, श्रीमती सीमा राजेश, डॉ. मीनाक्ष चतुर्वेदी।

प्रदेश के सदस्य

श्री कैलाश चतुर्वेदी देवास, श्री मनोज चतुर्वेदी सागर, श्री मनीष चतुर्वेदी इंदौर, श्री सर्वेश चतुर्वेदी सीहोर, श्रीमती वंदना जबलपुर।

अस्थायी समिति

(1) सभापति श्रीमती उषा चतुर्वेदी (भोपाल)
(2) कार्यवाहक मंत्री
श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी (नोएडा)
(3) कोषाध्यक्ष
श्री महेश चतुर्वेदी (दिल्ली)
(4) सदस्य
श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल)
(5) सदस्य
दिलीप सिकंदरपुरिया, (लखनऊ)

संविधान संशोधन समिति

(1) अध्यक्ष
श्रीमती उषा चतुर्वेदी, (भोपाल)
(2) सदस्य
डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी, (दिल्ली)
श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, (नोएडा)
शशांक चतुर्वेदी, (भोपाल)

जून माह की 15,16 तारीख को भोपाल में श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का अधिवेशन संपन्न हुआ। दिनांक 16 जून को श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के संविधान में संशोधन किए गए। उक्त संशोधन में शाखा सभाओं के सम्बद्धता शुल्क में संशोधन किया गया है। वर्तमान समय अनुसार – 551/– संबद्धता शुल्क देकर शाखा सभा का नवीनीकरण का फार्म भरकर शीघ्र भेज कर सहयोग करें। आगामी बैठक में सभी संबद्ध सहयोगी सभाओं की लिस्ट बैठक में पारित की जाएगी।

– **शशांक चतुर्वेदी,** महामंत्री
श्री मथुर चतुर्वेदी महासभा

न्यायमूर्ति स्वर्गीय श्री प्यारेलाल चतुर्वेदी

- डॉ. क्षमा चतुर्वेदी, कोटा

हम राब भाई बहनों ने जो कुछ अपने आरणीय नानाजी श्री प्यारेलाल चतुर्वेदी जी के बारे में जाना। यह सब अपनी मां श्रीमती कलावती जी के शब्दों से ही जाना था। नानाजी को देखने का सौभाग्य हम लोगों को नहीं मिला। पर मां इतना सटीक वर्णन अपने शब्दों द्वारा उनका करती थीं कि हमें लगता कि साक्षात नानाजी ही आकर हमारे सामने खड़े हैं। नानाजी का जन्म मथुरा में 26 अगस्त 1874 को हुआ था, तथा मृत्यु बीकानेर में 17 फरवरी 1926 को हुई। कानून की परीक्षा पास करने के उपरान्त उन्हें स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया था। पर अपने स्वभाव की सच्चाई के कारण वे सफल वकील नहीं बन पाए। तब एक बार किसी अफसर ने कहा कि आप तो अदालत में कम ही दिखते हैं तो नानाजी ने कहा कि सच्चे केस आते नहीं और झूठे हम लेते नहीं तो उन्होंने कहा कि आप तो फिर जज के इम्तेहान में पास कर वे फिर न्यायाधीश बने। मां को नानाजी अर्थात अपने पिता से अत्यधिक लगाव था। वैसे तो कहते हैं कि बेटियों को अपने पिता से अधिक प्रेम होता है, पर मां के साथ तो यह भी रहा कि वे जब मात्र ढाई वर्ष की थी तभी उनकी मां अर्थात हमारी नानाजी का देहान्त हो गया था। मां फिर उनकी दादी और यानी चाची के ही पालन-पोषण में रहीं। चाची भी असमय विधवा हो गई थी, पर नानाजी ने उनको घर की समस्त जिम्मेदारी सौंप दी थी तथा वे ही घर को सुचारू रूप से चलाती थीं। महिलाओं का हिस्सा जनाना भागः माना जाता था और नानाजी घर के अंदर जब कोई विशेष कार्य हो तभी आते थे। यहां सम्मिलित परिवार था। घर में चाची, बुआ, बहनें, भाई, चचेरे भाई बहन सभी एक परिवार की भांति रहते थे। कई लोग तो धीरे-धीरे परिवार का सदस्य बनकर हमेशा के लिए वहीं रहने लगे थे। दूसरे रिश्तेदार आते और कई कई दिन तक हमारे घर रहकर चली जाते। नानाजी सबका ध्यान रखते थे, हर एक की कुशल क्षेम पूछते रहते।

मां पर तो उनका अत्यधिक स्नेह था ही, क्योंकि वे ही उनके अंतिम समय तक साथ रहीं, पर यह साथ लंबा नहीं चल पाया क्योंकि मां मुश्किल से तेरह वर्ष की रही होंगी, तभी नानाजी का आकस्मिक देहावसान हो गया। पर इतने कम समय का पिता का साथ भी मां के जीवन पर एक अमिट छाप छोड़ गया। पिता के समय-समय पर कड़े शब्द, उनके निर्देश जैसे मां के जीवन के अभिन्न अंग बन गए थे।

मां हमें बताया करती थीं कि किस प्रकार नानाजी उन्हें समझाते कि कभी किसी के चरित्र पर आक्षेप मत करो, तुम उसके बारे में जानते ही कितना हो, फिर यह बात मां हमें भी समझाती थीं। नानाजी हमेशा कहते कि घरों में आपसी तनाव मत पालो, प्रेम से रहो, छोटी-छोटी बातों को बड़ा तूल मत दो।

मां जब यह सब हम लोगों को भी समझाती रहती थी और उसका प्रभाव हम भाई बहनों पर भी पड़ा।

नानाजी का जो दानप्रिय स्वभाव था, वह तो अचंभित करने वाला था। वे न्यायाधीश के पद पर थे, उस समय के हिसाब से वेतन काफी था, पर एक चौथाई तो गुप्त दान में ही जाता था। पहले घर पर पूछते कि कितने की आवश्यकता है, फिर बाकी रकम कहां गई कोई जान नहीं पाता। यहां तक कि भेजे गए मनी ऑर्डर की रसीदें भी जला दी जाती।

अपने पैतृक गांव चंद्रपुर से उन्हें गहरा लगाव था और वे चाहते थे कि नये परिधान नहीं आए, इसलिए वहां की पाठशाला में जो पंडित पढ़ाते थे उनका वेतन नानाजी ताउम्र भेजते रहे। फिर जो बच्चे पैसों के अभाव के कारण आगे पढ़ने में असमर्थ थे, उनकी शिक्षा का भी भार वहन किया। यही नहीं खानदान में निराश्रित, विधवा महिलाओं की भी सदैव मदद करते रहे।

मां बताती थीं कि जब वे लोग बीकानेर में थे तो वहां से महिलाओं के शाल, साड़ियां और छात्रों के जूते भारी मात्रा में भेजे जाते थे। कहां किसको क्या दिया यह नानाजी कभी नहीं बताते थे। उनके निधन के बाद जब लोगों के पत्र आए तब पता चला कि बिना बताए सबकी मदद करना ही उनका स्वभाव था। खानदान ही नहीं अपने मित्रों, सहकर्मियों की प्रक्ति एक सहृदयता का भाव था उनके मन। एक घटना मां बताती थी कि उनके मिलने वालों में एक पुराने मित्र थे काटजू जी,कभी उन्होंने नानाजी से जिक्र

किया था मनी आर्डर नहीं भेज पाए। इस बार मैं पैसे समय पर नहीं पैसे भेज पाया। तो बेटा आश्चर्य में पड़ गया। जसने कहा कि आप मनी आर्डर तो मुझे समय मिलते थे। तब काटजू जी को नानाजी के बारे में पता चला।

राम मित्र थे उनका कोई केस था पैसा न चुकाने के कारण दुकान की कुर्की होने वाली थी। पर वे आश्यस्त थे कि कुछ नही होगा क्योंकि जज साहब तो मेरे मिलने वाले हैं। जब नानाजी को पता चला तो उन्होंने चुपचाप चपरासी के द्वारा सारी रकम भिजवा दी। और दुकान कुर्की होने से बच गई व मित्रता कायम रही।

नानाजी का यह स्नेहिल स्वभाय मात्र मानव जीवन के प्रति ही नहीं था। पशुपक्षी, सभी जीवों के प्रति करुणावान थे। घर के बाहर अहाते में कारण पसंद ही नहीं करती थी। कि घर की महिलाएं पुराने विचारों की थी। कुछ कुत्ते बाहर सड़क है से घरों में कभी-कभार में प्रवेश करे, पर एक कुत्ता नानाजी से काफी हिल गया था। उनके साथ ही सुबह-शाम दौर पर खाना खाते तो दो चुपड़ी रोटियां अलग से उसके लिए निकालते। ये उसे भी कुछ खिलाते रहते। एक बार उन्हें बाहर टूर पर जाना था। नाना जी सोचा कि यही अच्छा मौका है इसे भगाने का। पर नाना जी कह गए थे कि उसे खाना देते रहना। नाना ने बिना भी की बासी रोटी उसे दिलवा देतीं। जब नानाजी लौटकर आए तो यह कुत्ता शिकायती लहजे में उनके पास आकर खड़ा हो गया था। क्या बात है नानाजी पूछते रहे तो उसने चुपचाप किसी पुराने बक्से के पीछे छिपाई गई सूखी रोटियां लाकर उनके सामने रख दी। ओह, नानाजी के समझते देर नहीं लगी और घर की महिलाएं भी लज्जित होकर रह गई। इसी प्रकार मां बताती थी कि बीकानेर से ब्रिडियाघर में शेरनी को बच्चे दिए, मां छोटी ही थी, आठ-नौ वर्ष की रही होगी तो उन्होंने जिद की कि शेरनी के बच्चों को देखने जाना है।

नानाजी ने समझाया कि अभी उन्हें जरूरी काम से बग्गी की आवश्यकता है तो मां उदास हो गई। नानाजी ने कहा- कोई बात नहीं मैं कुछ और इंतजाम कर लूंगा, तुम जाओ नहीं तो शेरनी गुस्सा हो जाएगी, कि मेरे बच्चों में भी यह कला नहीं आई।

सभी बातें याद करते हुए माँ उसी पुरानी दुनियां में पहुंच जाती थी। घर में श्राद्ध होता तो संस्कृत पाठशाला के विद्यार्थी बुलाए जाते, नानाजी का कहना था कि विद्यार्थी से श्रेष्ठ कोई ब्राह्मण नहीं होता। साथ ही वे जाति पांति के अलावा विधवा, सधवा, स्त्री, पुरूष का भी भेद नहीं मानते थे। उनका कहना था कि आत्मा तो सबकी एक ही है, उसमें भेद कैसा? अपनी आध्यात्मिक उन्नति के प्रति भी वे काफी सजग थे। भौतिक संपत्ति को उन्होंने कभी महत्व नहीं दिया। एक बार ज्योतिषि ने कहा कि आपकी शीघ्र ही उन्नति होने वाली है तो मां ने सोचा कि और बड़े पद पर जाना होगा, पर नानाजी बोले कि तुम हमेशा इसी संदर्भ में क्यों उन्नति को देखती हो, उन्नति तो अध्यात्मिक भी हो सकती है। और इसके चंद दिनों बाद ही नानाजी का देहावसान हो गया था।

पिता के इस आकस्मिक निधन से मां जैसे टूट ही गई थी। फिर अल्पायु में तेरह-चौदह वर्ष की उम्र में ही उनका विवाह भी कर दिया गया। पर पिता की जो यादें मां ने अपने साथ संजो रखी थी। जिसे ता-उम्र साथ रही। नानाजी महिलाओं की शिक्षा को भी बहुत महत्व देते थे, मां की शिक्षा में भी कोई कमी नहीं रखी थी, नानाजी कारण रहा कि मां का पुस्तकों के प्रति प्रेम सदैव बना रहा। उस बाल्यावस्था में भी इतनी पुस्तकें उनके पास थीं कि शादी के बाद एक बड़ा बक्सा पुस्तकों का उनके साथ ससुराल गया था। नानाजी अपने स्नेहिल स्वभाव, सत्यप्रियता और आदर्श नागरिक के रूप में मां के लिए तो आदर्श पुरुष थे। ही, हम सब भाई बहनों के लिए भी वे परम पूज्यनीय रहे।

पंडित प्यारे लाल जी, चंद्रपुर

पूर्व प्रधान जज बीकनेर स्टेट

जन्म-26-08-1874 निर्वाण 17-02-1927

- हरी चतुर्वेदी, नोयडा

न्याय मूर्ति पंडित प्यारेलाल जी चतुर्वेदी जी के बारे में हमारी पीढ़ी को जो जानकारी है वह चतुर्वेदी के विशेषांक से है। १९५६ में चतुर्वेदी महासभा , लखनऊ ने कप्तान निर्मल दास मिश्र, मैनपुरी द्वारा लिखित स्वर्गीय प्यारेलाल जी के कुछ संस्मरण पुस्तक प्रेषित की थी पंडित प्यारेलाल जी माथुर चतुर्वेदी महासभा के प्रथम अधिवेशन में १९२० ई में मंत्री बने और १९२५ में उसके सभापति बने।

स्वर्गीय मुन्नालाल जी मिश्र, सूबा साहब, जो स्वयं महासभा के दो बार सभापति रहे, ने अपने लेख में लिखा है -

....पंडित प्यारेलाल जी के ह्रदय में जाति हित कामना का अंकुर शुरू से ही विद्यमान था और प्रकट रूप से जाती सेवा उन्होंने १८९४ में शुरू की थी ---- अंत में जब वह मेरठ आ गए तब

वह श्रीयुत राधेलाल जी और अन्य महानुभावों को सम्मिलित करके श्री माथुर चतुर्वेदी सभा की स्थापना की और उसकी रजिस्ट्री करवाई तथा डेपुटेशन लेकर जगह जगह गए और कोष इकटठा किया व चतुर्वेदी सभा का मुखपत्र बनाया। महासभा बनाने का श्रेय अधिकांश उन्हीं को है। उनके अकाल स्वर्गवास से समाज और महासभा को जो क्षति हुई है उसका निराकरण होना कठिन ही नहीं वरन असंभव सा प्रतीत होता है।

स्वर्गीय प्यारेलाल जी के बारे में स्वर्गीय राधेलाल जी चतुर्वेदी मेरठ ने अपने लेख में लिखा है ....

अभी आप आगरा कालेज की उच्च श्रेढियों में विद्या अध्ययन ही कर रहे थे कि आपके अंदर विद्यमान जाति प्रेम की लहर जग गयी थी। चतुर्वेदी समाज में भी अन्य समाजों की भांति संगठन हो जिससे हम अपना अस्तित्व सदा कायम रख सखें। आपकी आय का अधिकांश भाग जाति की विधवा, अनाथ बालक, और असहाय प्राणियों की सेवा में ही व्यय होता था। वह भी गुप्त रूप से .... स्वर्गीय महामहोपाध्याय पंडित श्री गिरधर शर्मा चतुर्वेदी लिखते हैं। हम सब परमात्मा से अवश्य प्रार्थना करेंगे कि मिश्र प्यारेलाल जी जैसे नर रत्न को उत्पन्न करने का गौरव वह फिर हमारी जाति को प्रदान करे और उनके इस समाज की उन्नति के कार्य जो अधूरे रह गए, उन्हें उनके द्वारा ही सुसंपन्न करें।

साहित्याचार्य पंडित पदम सिंह शर्मा ने चतुर्वेदी का विशेषांक पढ़ कर स्वर्गीय बनारसी दास जी को पत्र में लिखा था ₹ ऐसे परोपकारी महात्मा की जीवनी की सामग्री का संग्रह करके आपने बड़े पुण्य का काम किया है। पंडित प्यारेलाल जी के जीवन में अनेक घटनाएं विद्यासागर के जोड़ की हैं .... प्यारेलाल जी एक असाधारण परोपकारी महात्मा थे।

स्वर्गीय लाला कन्नोमाल, जज धौलपुर ने लिखा है वह अपनी सज्जनता के कारन दूसरों की अवगुणो पर ध्यान नहीं देते थे। आपके वेतन का अधिकांश हिस्सा गुप्त दान में चला जाता था। बहुत से अनाथ, विधवा स्त्री विद्यार्थी , तथा अन्य दुखित नर नारी आपकी कमाई पर निर्वाह करते थे यह बात उनके पास रहने वालों तक को नहीं मालूम थी। उनके स्वर्गवास होने के बाद ही सबको मालूम हुई।

स्वर्गीय बनारसी दस जी ने अपने लेख में लिखा है, 'स्वर्ग्य प्यारेलाल जी का जीवन त्यागमय , सयमयुक्त ओर सरलतामय था जिसे १६०० का मासिक वेतन मिलता हो ओर मरने पर सिर्फ दो पैसा दो पाई छोड़ जाता हो और वह भी जब अपने ऊपर २५ – ३० रुपया से ज्यादा खर्च ना करता हो।

विशेषांक के लेखों से यह सिद्ध होता है की वह एक असाधारण, परोपकारी, महापुरुष थे ओर माथुर चतुर्वेदी के जाती रत्न थे। स्वर्गीय राधेलाल जी जी चतुर्वेदी = डिप्टी साहब होलीपुरा के शब्दों में ९–१० पहले स्वर्गीय अशोक, डिप्टी साहब के पौत्र नॉएडा आये थे। मैंने उनको स्मृति ग्रन्थ की एक प्रति भेंट की। उन्होंने बड़े आदर से उठ कर ग्रन्थ को माथे से लगाया। अगस्त २०२४ में पंडित प्यारेलाल जी का 150 वा जन्मदिन है।

समस्त चतुर्वेदी चंद्रिका टीम व महासभा की तरफ से भावपूर्ण श्रद्धांजलि

सूचना

जैसा कि सभी को विदित है कि तरसोखर ग्राम के माथुर चतुर्वेदियों की बहुप्रतीक्षित डायरेक्ट्री का प्रकाशन अंतिम चरण मैं है, अतः जो बांधव उसमें विज्ञापन, बधाई सन्देश, श्रद्धांजलि सन्देश देना चाहते हैं उसके लिए निम्नलिखित दरें निर्धारित की गई हैं –

आखरी कवर पेज बाहरी – रु 7000/–
आखरी कवर पेज अंदर – रु 6000/–
प्रथम कवर पेज अंदर – रु 7000/–
अंदर फुल पेज – रु 4000/–
अंदर हाफ पेज – रु 2500/–

इच्छुक बाँधव निम्न व्यक्तियों से संपर्क कर स्थान सुरक्षित कर सकते हैं –

1.ललित (लखनऊ) – 9415011198
2.संदीप (नानू)(ग्वालियर)–9826355565
3.अभिषेक (गप्पू)(ग्वालियर)–9827289143

साथ ही सभी ग्रामवासियों से निवेदन है कि जिन बांधवों ने डाइरेक्टरी के लिए अपनी डिटेल नहीं भेजी है वो भी जल्द से जल्द अपनी डिटेल भेज दें.

निवेदन
विश्वास (भोपाल)–8160686094

पिता स्वर्गः पिता धर्मः पिता परमकं तपः ।
पितरि प्रीतिमापन्ने सर्वाः प्रीयन्ति देवताः ॥

पापा की प्रथम पुण्य तिथि पर कुछ प्रियजनो से उनके साथ बिताए समय को एकत्र करके साँझा कर रही हूं, बस ईश्वर से यही प्रार्थना है कि आप जहां भी हो खुश हो।

अजय भाईसाहब :एक मोहक व्यक्तित्व

– डा०कुश चतुर्वेदी

कुछ रिश्ते खून के रिश्ते से अधिक गाढ़े होते हैं पूज्य नहुष चाचा के परिवार से हमारे परिवार के इतने ही घनिष्ठ नाते रहे हैं। नहुष चाचा हमारे पिताजी के घनिष्ठ मित्र थे तो उनके अनुज नरेंद्र चाचा उनके प्रिय विद्यार्थी रहे।आदरणीय अजय भाईसाहब नरेंद्र चाचा के बेटे थे।वह मध्यप्रदेश में इतिहास के व्याख्याता रहे बाद में पारिवारिक देख भाल के लिए उन्हें इटावा आना पड़ा।सामाजिक सद व्यवहार उन्हें पारिवारिक विरासत में मिला था। छै फुट से अधिक लम्बाई,गौर वर्ण,आकर्षक व्यक्तित्व, हंसमुख वार्तालाप की मोहित करने वाली कला लोगों को बरबस उनकी और आकृष्ट करती थी।अजय भाईसाहब मूक साधक थे वह लोगों की सामाजिक सहायता ऐसे करते थे जैसे वह उनका अपना काम हो।

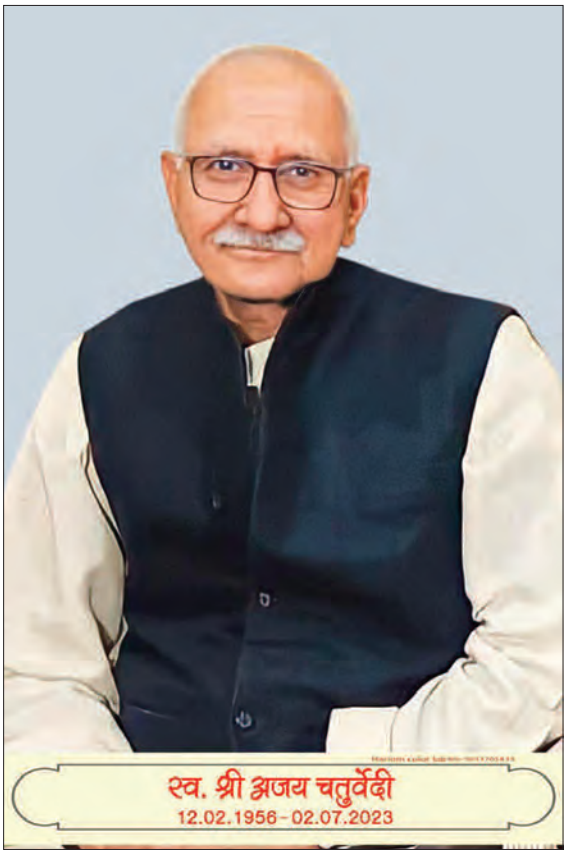

पूज्य नरेंद्र चाचा के बाद श्रद्धेय प्रभात भाईसाहब ने और उनके बाद अजय भाईसाहब ने बैंकटेश मंदिर की व्यवस्था को बखूबी सम्हाला।वह मंदिर के लिए सर्वांग समर्पित थे।मंदिर का स्थापना दिवस हो,रामानुजाचार्य जयंती हो,शंकराचार्य जयंती हो अथवा तुलसी जयंती , इन पर्वों को वह साहित्यिक स्वरूप में संयोजित करते थे।उनके निर्देश पर यह जिम्मेदारी मुझे निभाने का सौभाग्य मिलता था।उन्होंने अपने माता पिता की भरपूर सेवा की ।बहुत संयमित जीवन जीने वाले आदरणीय अजय भाईसाहब को पता नहीं कौन सी नज़र लग गई और वह असमय ही महायात्रा को चल दिए। वह सचमुच ऐसे योद्धा थे जो मौत के खौफ से कतई भयभीत नहीं हुए। अपने सम्पूर्ण दायित्वों को आपरेशन से पूर्व पूरा किया,कोई काम अधूरा न छोड़ा,मंदिर का पूरा हिसाब किताब समझाकर सुपुर्द किया ।कहीं कोई निराशा नहीं दिखाई दी।उनकी सहधर्मिणी मधु भाभी ने कदम से कदम मिलाकर उनका ऐसा साथ दिया कि कभी वह कभी न कमजोर बोले न निराशावादी।

अजय भाईसाहब बहुत जल्दी कर गए किंतु जो भी उनके संपर्क में आया वह उन्हें शायद ही कभी भूल पाए।उनकी पावन स्मृति को बारंबार प्रणाम।

अजय भाईसाहबः एक समर्पित व्यक्तित्व

– डॉ0 अरविन्द चतुर्वेदी

हमारे पिता जी का इटावा से बहुत अनुराग था। वे अपने बाबा पं0 चतुर्वेदी द्वारिका प्रसाद शर्मा के साथ कक्षा-6 में इटावा में साथ रहे थे। लेकिन मैंने अपने बचपन से उनका इटावा से घनिष्ठ सम्पर्क पूज्य नरेन्द्र चाचा के माध्यम से पाया। छिपैटी में नरेन्द्र चाचा के घर से मेरी भी बहुत यादें जुड़ीं हैं। नीचे की बैठक में लगे हुए तख्तों पर घण्टों किस्से-कहानियों के सिलसिले का मैं स्वयं साक्षी रहा हूँ और वहीं अजय भाई साहब से मुलाकात हुयी। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व से मेरा परिचय स्मृतिशेष भइया बाबू (प्रदीप चतुर्वेदी) ने कराया। इटावा में हमारे परिवार के वेंकटेश मन्दिर की सम्पूर्ण व्यवस्था अजय भाई साहब देखा करते थे। उनसे पूर्व प्रभात भाई साहब का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा था। अजय भाई साहब के व्यक्तित्व में एक नैसर्गिक आकर्षण था, जो उनसे मिलने वाले हर व्यक्ति को गहराई तक प्रभावित करता था। मैं अपनी पुलिस की नौकरी के दौरान दर्जनों बार उनके पास इटावा गया और बस कहने भर की देर होती थी कि फ़रमाइश की हुई हेशमी, जैन के लाल पेडे.या गली वाली दुकान की बासौंधी सामने आ जाती थी। उनका आग्रह रहता था कि मैं जब भी इटावा से गुजर रहा हूँ, तो कुछ देर के लिए ही सही, घर पर जरूर आऊं। उन्होंने पारिवारिक मन्दिर में बहुत सारा जीर्णोद्धार का कार्य कराया, जो उनकी अपार श्रद्धा के साथ-साथ उनके अगाध समर्पण को भी दर्शाता है। मेरे आग्रह

पर उन्होंने वेंकटेश मन्दिर ट्रस्ट के सभी कागज, ऑडिट रिपोर्ट अद्यावधिक करायी और अस्वस्थ होने के दौरान मन्दिर से जुड़े सभी परिजनों को उसकी प्रति भेजी, मानों वे इस आशंका से ग्रसित थे कि मन्दिर का कार्य किसी प्रकार से बाधित न हो। आदरणीय भाभी उनके शेष कार्यों को पूरा करने के लिए कृत संकल्प हैं और वैसा ही स्नेह हम सबको दे रहीं हैं। अजय भाई साहब अपनी परमयात्रा पर प्रयाण तो कर गए, लेकिन आस्था, भक्ति और समर्पण का एक बहुत शक्तिशाली मानक बना गये।

आदरणीय भईयो चाचा (अजय चतुर्वेदी जी)

– मनीष चतुर्वेदी इटावा/लखनऊ

क्या भूलूं क्या याद करूं...

गौर वर्ण,सवा छह फुट लम्बाई,छरहरा बदन दमदार आवाज...एक आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी भईयो चाचा से मेरी पहली मुलाकात 1984 में हुई थी जब मैं 11वी का विधार्थी था...अपने बाबू (पिता जी) के साथ छैराहा जा रहा था तो आपके दरवाजे पर आप अपने पिता जी के साथ खड़े थे..2 बहिनों और स्वयं को शादी के लिए इटावा आए थे..उसके पहले कोई परिचय नही था मेरा। मेरे पिता जी ने बाबा और चाचा दोनो से परिचय करवाया.. और आगे बढ़ गए.. संबंधों में प्रगाढ़ता पनपी जब मैं नौकरी करने आगरा गया और उसके कुछ अंतराल के बाद भईयो चाचा भी आगरा आ गए..फिर तो प्रत्येक सप्ताह मुलाकात होनी शुरू हुई...जो आपके गोलोक गमन से पूर्व तक अनवरत बनी रही... वैसे जब मेरा परिवार मैनपुरी से इटावा आया तो मेरी बड़ी दादी अपने मायके में न रहकर आपके ही मकान में रही उसके बाद दीवान साहब की कोठी के सामने आवास क्रय किया...

आगरा से जब भी शनिवार को इटावा नही जाता था तो वह शाम चाचा के साथ ही रहना होता था...मिलकर भोजन बनाया जाता था..

चाचा भी खाने के बहुत शौकीन थे और दही बेहद पसंद था.. धीरे धीरे वह और मैं अच्छे दोस्त बन गए हालांकि वह अभिवावक तो थे ही मेरे। अगर मैं एक सप्ताह उनसे नही मिल पाता था तो वह स्वयं सिकंदरा से मेरे आवास कमला नगर आ जाते थे..या मेरे स्टॉकिस्ट से सूचित कर देते थे कि मनीष से कह देना मुझसे बात कर ले। समाज के परम हितैषी थे साथ ही हम लोग उन्हें समस्या निवारक भी कहा करते थे..कभी भी विचलित न होना आपका नैसर्गिक गुण था...माता पिता को वृद्धावस्था को देखते हुए आप इटावा आ गए और मैं भी आगरा से स्थांतरित होकर अन्य शहरों में होता हुआ लखनऊ आ गया। किस्सागोई आपका विशेष गुण था और आप कहां बैठ जाए वहां हंसी ठहाके अनिवार्य थे। होली दिवाली पर 15 दिन पहले ही फोन कर पूछना कब आए रहे हो? मेरे मां पिता इटावा में अकेले ही रह रहे है..उनका भी पूरा ख्याल रखना आपकी दिन चर्या में शामिल था।इटावा आने के बाद भगवान वेंकटेश मंदिर की सेवा आपका मुख्य कार्य था। भइयो चाचा के साथ की अनगिनत सुखद स्मृतियां है..प्रथम पुण्य तिथि पर सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं और प्रभु से प्रार्थना है आदरणीय चाची जी स्वस्थ रहे व बेटी सौम्या सपरिवार उत्तरोत्तर प्रगति करती रहे।

मेरे प्रिय चाचा आदरणीय श्री अजय चतुर्वेदी जी (भइयो)

– डॉ मुदित चतुर्वेदी

महाप्रबंधक , दैनिक जागरण, बरेली (उत्तर प्रदेश)

कहने को यादों को शब्दों में पिरोना किसी लेखक के लिए तो आसान होता होगा पर अपने लोगों के लिए यादों को समेटना मेरे लिए काफी मुश्किल काम है क्योंकि यादें इतनी हैं कि उनको याद करके लिखना समझ में नहीं आता अरे कहीं ये लिखें तो कहीं वा ना छूट जाए। चूंकि हम लंबे समय से इटावा से बाहर हैं तो आज भी लगता है कि इटावा में जाएंगे तो भइयो चाचा तो मिलेंगे ही, मंदिर से जुडी किसी भी बात के लिए अरे भइयो चाचा तो हैं ही लेकिन किसे पता है कि वो चाचा अब हम सबके बीच हैं ही नहीं।चाचा जी को मैं बचपन से ही जानता था क्यों कि हम इटावा में ही रहते थे और चूंकि हम एक ही परिवार थे तो स्वा।भाविक है कि जान पहचान भी होगी ही मैने आज तक किसी को चाचा कहा है तो वो केवल भइयो चाचा ही थे। शुरू से हम श्री वैष्णैव परिवारों की आस्थाा का एक ही बिंदु रहा है।

वह है इटावा स्थिमत श्री वेंकटेश मंदिर। बचपन में रोज आरती गानी और चाचा जी हमेशा हम बच्चों में उत्साहह भरते और अचानक ही आरती fastrack पर चलने लगती और हम बच्चोंर को बहुत मजा आता प्रसाद आदि के बाद हमारे घर होती कैरम की बाजियां मैं और मेरी बहनें, मम्मी, पापा जी और भइयो चाचा हम लोगों के बीच जबरदस्तं मुकाबले होते उन दिनों बिजली की इटावा में काफी समस्याब रहती थी तो लालटेन में खेल होता मतलब एक हिंदी thriller मूवी की तरह माहौल रहता।पापा जी और भइयो चाचा कहने को दो अलग पिताओं की संतान थे पर सगे भाइयों की तरह सम्मोान भी और मंदिर की बात आ जाए तो फिर दोनों ही एक होकर किसी से भी मंदिर के कामों के लिए चंदा मांगने में भी कोई शर्म नहीं । इन्हीं लोगों की मेहनत का नतीजा था कि आज भी वेंकटेश जी का मंदिर अपनी गति से ही फल फूल रहा है। अंत में मेरी श्री वेंकटेश जी से प्रार्थना है कि वह अपने दोनों ही भक्तोंए की आत्मो को शांति प्रदान करें। (र.क्र.2243)

शाखा समाचार

फ़रीदाबाद

31 मार्च 2024 को संपन्न हुई आम बैठक में श्री सुशील चतुर्वेदी, फरौली/फ़रीदाबाद निवासी को निर्विरोध सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया। परंपरा के अनुसार उन्हें अपनी कार्यकारिणी स्वयं चुनने के लिए समय दिया गया। रविवार 7 अप्रैल को श्री सुशील चतुर्वेदी ने 2024 -25 से 2026-27 तक के लिए अपनी कार्यकारिणी घोषित की। शाखा सभा फरीदाबाद का गठन वर्ष 2021 में होली मिलन के अवसर पर किया गया था और यह इस सभा का पहला चुनाव था। विशेष बात यह रही कि नई कार्यकारिणी में महिलाओं को भी स्थान दिया गया ताकि आधी आबादी का प्रतिनिधित्व कार्यकारिणी के माध्यम से किया जा सके और किसी भी साधारण या विशेष विषय पर महिलाओं का पक्ष भी जाना जा सके। श्री सुशील चतुर्वेदी, अध्यक्ष ने इस अवसर पर कहा कि जब श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा जो एक शतक से भी अधिक पुरानी है, की अध्यक्षता ऊषा चतुर्वेदी जी जैसी सक्षम महिला के हाथों में है, जो अपने आप में एक ऐतिहासिक पहल है, तो क्यों नहीं शाखा स्तर पर भी महिलाओं को उचित प्रतिनिधित्व दिया जाए। घोषित की गई कार्यकारिणी में श्री अशोक चतुर्वेदी (होलीपुरा/फरीदाबाद) उप सभापति के पद पर बने रहेंगे और श्री संजय चतुर्वेदी (होलीपुरा/फ़रीदाबाद) भी पहले की तरह सचिव पद का कार्यभार संभालेंगे। अभी तक संजय चतुर्वेदी ही कोषाध्यक्ष का पद भी संभाल रहे थे। अब यह पद भार श्री रुचिर चतुर्वेदी (मथुरा/झाँसी/फ़रीदाबाद) के युवा कन्धों पर डाला गया है।

कार्यकारिणी के अन्य सदस्य इस प्रकार हैं :

1. श्री प्रदीप चतुर्वेदी, फरौली/ फ़रीदाबाद
2. श्री हेमंत कुमार पांडे (हेमी), होलीपुरा/ फ़रीदाबाद
3. श्री शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी, फरौली/ फ़रीदाबाद
4. श्री शिव कुमार चतुर्वेदी, फरौली/ फ़रीदाबाद
5. श्री सुनील कुमार मिश्रा, आगरा/ फ़रीदाबाद
6. श्री प्रवीन कुमार चतुर्वेदी, होलीपुरा/ मैनपुरी/ मथुरा/ फ़रीदाबाद
7. श्रीमती मंजुल नीरज चतुर्वेदी डिबाई/फ़रीदाबाद
8. श्रीमती पारुल गौरव चतुर्वेदी चंद्रपुर/ फ़रीदाबाद

- संजय चतुर्वेदी

समाज समाचार

- श्री दीपक जी चतुर्वेदी पुत्र स्व श्री सुरेश चन्द्र चतुर्वेदी मैनपुरी / अजमेर का दिनांक 24.04.2024 को असामयिक स्वर्गवास हो गया है। उनकी आत्मा की शांति के लिये उनकी पत्नी श्रीमती शशी चतुर्वेदी द्वारा पांच हजार एक सौ रूपये अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ प्रदान किए।

***

- भाई चेतन चतुर्वेदी सुपुत्र श्री खगेन्द्र नाथ चतुर्वेदी (मैनपुरी/नोएडा) को कंपनी द्वारा बेस्ट परफॉर्मेंस का अवार्ड फुकेट में एक समारोह में दिया गया।

***

- स्वर्गीय श्रीमती सुषमा चतुर्वेदी (कछपुरा) पत्नी स्वर्गीय डॉ. श्री यतींद्र नाथ चतुर्वेदी (औरैया/सिकंदरपुर) की स्मृति में उनकी पुत्री डॉ. प्राची चतुर्वेदी (होलीपुरा/भोपाल) द्वारा 5000/- अन्नपूर्णा सहायतार्थ दिए गए।

***

- चि. दीपांशू पुत्र श्री लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी ने चाची श्रीमती निधी एवं चाचा श्री मनीष (फरौली/गाजियाबाद) की वैवाहिक वर्षगांठ पर अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ 12000/- प्रदान किए। (र.क्र.2189)
- सौ. आरुषी सुपौत्री श्री महेश चन्द्र जी एवं स्व. गिरिजा जी सुपुत्री श्री राजीव जी एवं श्रीमती नीलिमा चतुर्वेदी (मैनपुरी/लखनऊ) का शुभ विवाह (11 मार्च 2024) चि मृदुल सुपौत्र श्री रामदास जी एवं स्व शांति जी सुपुत्र स्व. नरेंद्र कुमार जी एवं श्रीमती अनुराधा चतुर्वेदी (शाहाबाद/गाजियाबाद) के साथ सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में राजीव जी ने रु 2100/अन्नपूर्णा योजना हेतु दिए। बधाई।
- स्व.श्रीमती गीता चतुर्वेदी की स्मृति में डॉ. श्री दिवाकर नाथ चतुर्वेदी (पुरा/भोपाल) द्वारा अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ 15000/- प्रदान किए गए।
- श्री कृष्ण कांत चतुर्वेदी(राघो) 12000/ (-पुरा/हैदराबाद), श्री प्रणव चतुर्वेदी (पंकू)(कमतरी/ हैदराबाद) द्वारा 5000/- एवं श्रीमती बीना मिश्रा(मैनपुरी/आगरा) द्वारा 8000/-कुल जमा 25000/-की सहयोग राशि अन्नपूर्णा सहयोगार्थ प्रदान की।

बिछड़े स्वजन

* श्रीमति आशा चतुर्वेदी पत्नी स्व. रामकिशन चतुर्वेदी (होलीपुरा/दिल्ली) का स्वर्गवास दिनांक 05 जून 2024 को हो गया।

---

* श्रीमती रुक्मिणी पत्नी स्व. नरेंद्र नाथ जी (कमतरी/प्रयागराज) का स्वर्गवास दिनाँक 07 जून 24 को अहमदाबाद में हो गया।

---

* श्री योगेश चतुर्वेदी (मैनपुरी/उज्जैन) का स्वर्गवास 13 जून 2024 को हो गया।

---

* स्व.प्रभुदयाल जी चतुर्वेदी,ग्वालियर के पुत्र श्री अतुल चतुर्वेदी का स्वर्गवास दिनाँक 14/06/2024 को नोएडा में देहांत हो गया।

---

* श्रीमती सुनीता पत्नी श्री अविनाश चतुर्वेदी का स्वर्गवास 18 जून 2024 को सिकंदरपुरखास में हो गया।

---

* श्रीमती किरण चतुर्वेदी,लल्ली पत्नी श्री चंद्रकांत चतुर्वेदी (बबलू) (होलीपुरा/रिसड़ा) का स्वर्गवास दिनाँक 22/06/24 रिसड़ा में हो गया है।

---

* श्रीमती साधना (गुड्डी) पत्नी स्वर्गीय श्री राजकुमार चतुर्वेदी (इटावा/ इलाहाबाद/गुरूग्राम), का स्वर्गवास दिनाँक 23/06/24 को गुरूग्राम में हो गया।

---

* श्री मुकुल जी पुत्र स्व. कामिनी मोहन जी (इटावा/लंगड़े की चौकी, आगरा) का प्राणांत दिनाँक 4 जुलाई 2024 को आगरा में हो गया।

---

* श्री विमल चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री दया राम चतुर्वेदी (बटेश्वर/कानपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 11 जुलाई 2024 को कानपुर में हो गया।

---

* श्रीमति शोभा चतुर्वेदी पत्नी श्री महेंद्र नाथ चतुर्वेदी(चंद्रपुर/कानपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 18 जुलाई हो गया।

---

* श्रीमती जावित्री पत्नी स्व वैकुंठ नाथ जी (हिंडौन/लखनऊ) का स्वर्गवास 18 जुलाई 2024 को लखनऊ में हो गया।

---

* श्रीमति मनोरमा चतुर्वेदी पत्नी स्वर्गीय श्री रजनीकांत चतुर्वेदी (राजा) (फिरोजाबाद/दिल्ली) का देहावसान दिनाँक 17 जुलाई 2024 को हो गया। आप पिछले कुछ समय से अस्वस्थ थी।

---

* डॉ ओंकार नाथ जी चतुर्वेदी (कोटा/मथुरा) पुत्र श्री मदन मोहन जी का देहावसान 88 वर्ष की आयु में दिनाँक 08-06-2024 को कोटा में हो गया। आप राजस्थान के प्रतिष्ठित शिक्षाविद व साहित्यकार थे ।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

: जन्म :
13 मार्च 1936

: गोलोकगमन :
7 जून 2024

श्रीमती रुक्मिणी

पत्नी स्व. नरेंद्र कुमार चतुर्वेदी
(कमतरी/इलाहाबाद)

शोकाकुल

पुत्र –पुत्रवधू	:	जितेंद्र (अनिल)– स्व. अल्का। राजीव – शालिनी।।
पुत्री – दामाद	:	अनिता – शैल।
धेवती – दामाद	:	नेहा – समीर। प्रिया – निखिल।।
नातिन – दामाद	:	अनुश्री – अंकुर। शुभांगी – श्रेय।।
नाती– नातिन	:	आयुष – इशिता।
बच्चे	:	नकुल, मेहुल,अनय एवं अवनि।

पता : 304, लक अपार्टमेंट ब्लन्ट स्क्वायर (दुर्गा पुरी), लखनऊ।
मो. : 9140776495 / 8787204639

(र.क्र. 2253)

हमारी प्यारी अम्मा एवं दादी

आप के सभी के प्रति आत्मीय, स्नेहपूर्ण एवम् निस्वार्थ व्यवहार ने आपको औरों से अलग व्यक्तित्व की पहचान दी। आप की प्रगतिवादी सोच ने हमेशा हमारा मार्गदर्शन किया। आप की कमी हम सभी को निरंतर खलेगी!

– हम सबका शत–शत् नमन

श्रीमती साधना (गुड्डी) चतुर्वेदी

होलीपुरा/इलाहाबाद/गुड़गाँव

जन्म –15 सितंबर 1943, स्वर्गवास – 23 जून 2024

पत्नी स्वर्गीय श्री राज कुमार चतुर्वेदी

इटावा/इलाहाबाद/गुड़गाँव

शोकाकुल परिवार

सौम्या चतुर्वेदी (पुत्री)

सलिल चतुर्वेदी – नूपुर चतुर्वेदी (पुत्र – पुत्रवधु)

समीर चतुर्वेदी – ऋचा चतुर्वेदी (पुत्र –पुत्रवधु)

पंखुरी चतुर्वेदी, पार्थ चतुर्वेदी, त्रिशान (पोत्री–पौत्र)

एवम् समस्त परिवार

पता : जीएच–2/6बी, आर्किड गार्डन, सनसिटी, गोल्फ कोर्स रोड, गुड़गाँव–122011

दूरभाष : 9810098518, 9999090022

(र.क्र. 2275)

चतुर्थ पुण्य स्मरण

जन्म : 5.5.60
निर्वाण : 7.7.20

स्वर्गीय प्रभात चंद्र चतुर्वेदी (पुरा कन्हैरा)

सुपुत्र स्वर्गीय दयानंद चतुर्वेदी/स्वर्गीय श्रीमती सरोज चतुर्वेदी

आपके आदर्श एवम प्रेरणा है हमारा जीवन
आपको हम सभी का शत शत नमन

श्रद्धावनत

पत्नी	:	श्रीमती चित्रा चतुर्वेदी
पुत्र	:	अनिक चतुर्वेदी
		अंकित चतुर्वेदी
चाचा – चाची	:	दिवाकर नाथ चतुर्वेदी, भरत चतुर्वेदी
		श्रीमती उषा चतुर्वेदी
भाई	:	मनीष चतुर्वेदी
		शालिनी चतुर्वेदी
		मितार्थ चतुर्वेदी
बहन	:	प्रीति चतुर्वेदी – अनुज चतुर्वेदी
		रेनु चतुर्वेदी – नवीन चतुर्वेदी
		डॉ. मीनू चतुर्वेदी
भांजे – भांजी	:	प्रतीक – गरिमा चतुर्वेदी
		सौम्या – ऐश्वर्य चतुर्वेदी
		आयुषी – शुभम चतुर्वेदी
		अद्विता चतुर्वेदी

(र.क्र. 2254)

महासभा अधिवेशन 2024

महासभा अधिवेशन 2024

महासभा अधिवेशन 2024

अश्रुपूर्ण स्मृति

प्रथम पुण्यतिथि

(3 अगस्त 2024)

परिवार जिसका मंदिर था,
स्नेह उनकी शक्ति थी।

परिश्रम जिसका कर्तव्य था,
परमार्थ उनकी भक्ति थी।

श्रीमती ऋगी चतुर्वेदी

1957–2023

।। न बिसरा सके हैं आज तक, न बिसरा सकेंगे जनम भर।।

सहभागिनी: श्री अश्विनी चतुर्वेदी (बिजकौली, दिल्ली, अलीगढ़)

पुत्री: स्व. श्री दिनेश चतुर्वेदी (कमतरी, सहारनपुर, दिल्ली)

ऋगी से अधिकतर ज्ञान, और कहाँ मिले,
जो कमल सी खिलकर हर मन को अपंक करें।
दौलत, शोहरत, खूबसूरती से हों जो धनी,
महान दिल की सबसे बड़ी परोपकारी।
अनंत प्रशंसनीय एवं विजयी कार्यों से धन्य,
हैं हर रूप से एक अनोखी कलाकृति सम्माननीय।
जिनके सफल नेतृत्व, प्रबंधन से हर जीवन सुहावना हुआ,
है जिनकी जुबान पे सबके लिए दुआ,
हाँ, वही हैं मेरी बुआ।

– आर्यन पांडेय

– असमय प्रयाण से उत्पन्न हुए शून्य में स्तब्ध समस्त परिवार –

निवास : ए–402, पवित्रा अपार्टमेंट, वसुन्धरा एन्क्लेव, दिल्ली – 110096

मोबाइल : 8383052367, 9868838002

(र.क्र. 2271)

R.N.I. NO. MAR/2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' जुलाई – अगस्त 2024

पत्र व्यवहार का पता– ''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' ई–8/जी–2/255,
गुलमोहर कॉलोनी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–39,
ईमेल –sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

महासभा अधिवेशन 2024